CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2017 with Solution PDF-Set 2/1/3 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 7, 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

भारत का हृदय गाँवों में बसता है। यहीं पर सेवा और परिश्रम के अवतार किसान रहते हैं, जो हम सब के अन्नदाता और सम्पूर्ण सृष्टि के पालक हैं। किसान का नाम आते ही हमारी आँखों के सामने एक ऐसे असहाय और दयनीय व्यक्ति की छबि घूमने लगती है जिसकी आँखों में निराशा का अँधेरा दिखाई देता है किन्तु होता है वह परिश्रमी एवं स्वाभिमानी व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति। उसकी दुरवस्था के लिए वह खुद भी जिम्मेदार है जिसके अनेक कारण हैं। अशिक्षा के कारण वह न तो अपने अधिकारों की ओर जागरूक है और न वर्तमान तकनीकी विकास की ओर ही उसका ध्यान जा पाता है। परिणामतः उसकी पैदावार प्रभावित होती है और उसे अपने उत्पादन का उचित मूल्य भी नहीं मिल पाता। अत्यन्त अल्पमूल्य में वह अपना बहुमूल्य परिश्रम साहूकार अथवा सरकार के हाथ सौंप देता है और वह सदैव फटेहाल ही रह जाता है।

इसके साथ-साथ किसानों के किसी संगठन का अभाव भी उसके विकास में सबसे बड़ा बाधक है। वह अपने खून-पसीने की गाढ़ी कमाई को आपसी झगड़े-झंझट की बलि चढ़ा देता है। दादा की पुश्तैनी रंजिश पोते तक और उससे आगे तक चलती रहती है। फलतः कोर्ट-कचहरी उसके परिश्रम को खा जाती हैं। इन सबके साथ-साथ सरकारी योजनाओं के केन्द्र प्रायः नगर ही रहते हैं। जहाँ से किसान का कोसों दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं रहता। फलतः कुछ मुट्ठी भर लोग ही उसका लाभ उठाते रहते हैं और वह दीन-हीन किसान अपनी दुरवस्था पर आँसू बहाता रहता है। इन सबके अतिरिक्त अंधविश्वासी परम्परावादी होना भी उसके लिए अभिशाप होता है।

पूँजी का अभाव किसान की सनातन समस्या है। बीज, खाद, उपकरण खरीदने की क्षमता प्रायः उसके पास नहीं होती और वह या तो साहूकार की ओर मुँह करता है या बैंकों की ओर। फँसता वह दोनों ओर है। यदि किन्हीं प्राकृतिक या मानवी कारणों से फसल मारी गई तो ऋण-वसूली में न साहूकार दया करता है, न बैंक। उसका आधार नहीं रहता, उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक जाती है और उबरने का कोई रास्ता न देखकर वह आत्महत्या करने को विवश हो जाता है। 'ग्रामदेवता', 'अन्नदाता' जैसे विशेषण उसकी हँसी उड़ाते हैं। [15 अंक]

1(क). अशिक्षित होने से किसान को क्या-क्या हानियाँ होती दिखाई पड़ती हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अशिक्षा किसान को अपने अधिकारों और वर्तमान तकनीकी विकास से दूर रखती है।
- उत्तर में गद्यांश के संबंधित कथन और उससे निकलने वाले अर्थ को जोड़कर समझाना आवश्यक है।

चरण 1: अधिकारों और तकनीक का ज्ञान न होना गद्यांश के अनुसार अशिक्षा के कारण किसान अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होता। उसका ध्यान वर्तमान तकनीकी विकास की ओर भी नहीं जाता। इस कारण वह कृषि में उपलब्ध नई जानकारी और तकनीकों का समुचित लाभ नहीं उठा पाता।

चरण 2: उत्पादन और आय पर प्रभाव तकनीकी विकास से दूर रहने के कारण उसकी पैदावार प्रभावित होती है। अधिकारों के प्रति जागरूकता न होने से उसे अपने उत्पादन का उचित मूल्य भी नहीं मिल पाता। वह अपना बहुमूल्य परिश्रम अत्यंत कम मूल्य पर साहूकार अथवा सरकार को सौंप देता है और निर्धन बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः अशिक्षा से किसान अधिकारों एवं नई तकनीक के ज्ञान से वंचित रहता है; उसकी पैदावार और आय प्रभावित होती हैं तथा उसे उपज का उचित मूल्य नहीं मिलता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अशिक्षा का कारण लिखकर उससे जुड़ी दो हानियाँ, तकनीकी पिछड़ापन और उपज का कम मूल्य, स्पष्ट कीजिए।

1(ख). किसान के मार्ग की दो कठिनाइयों का विवेचन कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में किसान की आर्थिक कठिनाइयों के साथ उसके सामाजिक असंगठन की समस्या भी दिखाई गई है।
- उत्तर में गद्यांश के संबंधित कथन और उससे निकलने वाले अर्थ को जोड़कर समझाना आवश्यक है।

चरण 1: संगठन का अभाव किसानों के किसी संगठन का अभाव उनके विकास में बड़ा बाधक है। वे अपने हितों के लिए संगठित नहीं

हो पाते और अपनी गाढ़ी कमाई आपसी झगड़ों में गँवा देते हैं। पुश्तैनी रंजिशों के कारण कोर्ट-कचहरी में उनका धन और परिश्रम नष्ट होता है।

चरण 2: पूँजी का अभाव दूसरी कठिनाई खेती के लिए पर्याप्त पूँजी न होना है। बीज, खाद और उपकरण खरीदने की क्षमता न होने पर किसान साहूकार या बैंक से ऋण लेता है। फसल नष्ट हो जाने पर भी ऋण-वसूली से उसे राहत नहीं मिलती, जिससे उसकी आर्थिक दुर्दशा और बढ़ जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान के मार्ग की दो बड़ी कठिनाइयाँ संगठन का अभाव और पूँजी की कमी हैं। पहली उसके सामूहिक हितों को कमजोर करती है और दूसरी उसे ऋण पर निर्भर बनाती है।

त्वरित सुझाव: दो कठिनाइयाँ चुनकर प्रत्येक के साथ उसका परिणाम भी लिखिए; केवल नाम गिनाने से विवेचन पूरा नहीं होता।

1(ग). पुश्तैनी रंजिश का क्या तात्पर्य है? इसका दुष्परिणाम लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संदर्भ में किसी पद का अर्थ उसके साथ वर्णित घटना और प्रभाव से स्पष्ट होता है।
- उत्तर में गद्यांश के संबंधित कथन और उससे निकलने वाले अर्थ को जोड़कर समझाना आवश्यक है।

चरण 1: पुश्तैनी रंजिश का तात्पर्य पुश्तैनी रंजिश से तात्पर्य पूर्वजों के समय से चले आ रहे वैर-विरोध से है, जिसे अगली पीढ़ियाँ भी बनाए रखती हैं। गद्यांश में दादा की दुश्मनी का पोते तक और उससे आगे भी चलते रहना इसी प्रवृत्ति को व्यक्त करता है।

चरण 2: आर्थिक हानि का परिणाम ऐसी रंजिशें लगातार आपसी झगड़े और मुकदमेबाजी पैदा करती हैं। किसान के खून-पसीने की कमाई कोर्ट-कचहरी में खर्च हो जाती है। अपनी खेती और विकास पर खर्च होने वाला धन पुराने विवादों की भेंट चढ़ जाता है, जिससे उसकी दुरवस्था बनी रहती है और खेती के विकास के अवसर घट जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पुश्तैनी रंजिश पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आने वाली दुश्मनी है। इसका दुष्परिणाम यह है कि किसान का परिश्रम और धन आपसी झगड़ों तथा मुकदमेबाजी में नष्ट हो जाता है।

त्वरित सुझाव: पुश्तैनी का संबंध पीढ़ियों से और रंजिश का संबंध वैर से जोड़िए; फिर कोर्ट-कचहरी वाला दुष्परिणाम लिखिए।

1(घ). 'किसान की सनातन समस्या' क्या मानी गई है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सनातन समस्या का आशय लंबे समय से निरंतर बनी हुई कठिनाई से है।
- उत्तर में गद्यांश के संबंधित कथन और उससे निकलने वाले अर्थ को जोड़कर समझाना आवश्यक है।

चरण 1: समस्या की पहचान गद्यांश में पूँजी के अभाव को किसान की सनातन समस्या कहा गया है। खेती चलाने के लिए उसे बीज, खाद और उपकरण जैसी आवश्यक वस्तुएँ खरीदनी पड़ती हैं, किंतु प्रायः उसके पास इन्हें खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता।

चरण 2: समस्या के स्थायी बने रहने का कारण अपनी खेती की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए किसान को साहूकार अथवा बैंक से ऋण लेना पड़ता है। यदि फसल नष्ट हो जाए तो आय का आधार समाप्त हो जाता है, फिर भी ऋण-वसूली जारी रहती है। इस प्रकार धन की कमी और ऋण पर निर्भरता उसकी कठिनाई को बनाए रखते हैं। यही कारण है कि खेती करने के लिए धन जुटाना उसके जीवन की बार-बार सामने आने वाली समस्या बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान की सनातन समस्या पूँजी का अभाव है, क्योंकि उसके पास बीज, खाद और उपकरण खरीदने का धन प्रायः

नहीं होता और उसे ऋण पर निर्भर रहना पड़ता है।

त्वरित सुझाव: पहले पूँजी का अभाव लिखिए, फिर बीज, खाद और उपकरण की आवश्यकता से स्पष्ट कीजिए कि यह समस्या क्यों है।

1(ङ). "फँसता वह दोनों ओर है।" कैसे? समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उद्धृत कथन में दोनों ओर से अभिप्राय साहूकार और बैंक, इन दो ऋणदाताओं से है।
- उत्तर में गद्यांश के संबंधित कथन और उससे निकलने वाले अर्थ को जोड़कर समझाना आवश्यक है।

चरण 1: ऋण लेने की विवशता किसान के पास बीज, खाद और कृषि उपकरण खरीदने के लिए पर्याप्त पूँजी नहीं होती। इसलिए उसे खेती की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए या तो साहूकार की ओर देखना पड़ता है या बैंक से ऋण लेना पड़ता है। दोनों ही स्थितियों में वह कर्जदार हो जाता है।

चरण 2: फसल नष्ट होने पर संकट प्राकृतिक अथवा मानवीय कारणों से फसल नष्ट हो जाने पर किसान की आय का आधार समाप्त हो जाता है। फिर भी ऋण-वसूली में न साहूकार दया करता है, न बैंक। जिसके पास ऋण चुकाने का साधन ही नहीं बचता, उस पर दोनों प्रकार के ऋणदाताओं का दबाव बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान साहूकार से ऋण ले या बैंक से, फसल नष्ट होने पर भी दोनों ऋण-वसूली करते हैं। चुकाने का साधन न बचने पर वह दोनों ही स्थितियों में संकट में फँस जाता है।

त्वरित सुझाव: दोनों ओर का अर्थ साफ लिखिए: साहूकार और बैंक। फिर दोनों में समान ऋण-वसूली के दबाव को समझाइए।

1(च). किसानों के द्वारा आत्महत्या का मुख्य कारण क्या होता है? उससे छुटकारा आपके विचार से कैसे संभव है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में कारण गद्यांश से लेना है और छुटकारे के उपाय अपने विचार के रूप में प्रस्तुत करने हैं।
- उत्तर में गद्यांश के संबंधित कथन और उससे निकलने वाले अर्थ को जोड़कर समझाना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश के अनुसार मुख्य कारण फसल नष्ट हो जाने पर किसान के पास आय का आधार नहीं रहता, किंतु साहूकार और बैंक ऋण-वसूली में दया नहीं करते। कर्ज चुकाने का कोई साधन और संकट से उबरने का रास्ता न दिखाई देने पर वह घोर निराशा में आत्महत्या करने को विवश हो जाता है।

चरण 2: छुटकारे के लिए विचार मेरे विचार से सस्ता और सुलभ कृषि ऋण, फसल नष्ट होने पर समय पर सहायता तथा ऋण चुकाने में राहत इस संकट को कम कर सकती है। उपज का उचित मूल्य और कृषि संबंधी जागरूकता भी आवश्यक हैं। इन उपायों से किसान की आय और सुरक्षा बढ़ेगी तथा असहायता की स्थिति घटेगी।

चरण 3: निष्कर्ष मुख्य कारण फसल नष्ट होने के बाद ऋण चुकाने की असमर्थता और उससे उत्पन्न निराशा है। सुलभ ऋण, आपदा में सहायता, ऋण-राहत और उपज का उचित मूल्य देकर इससे छुटकारा संभव है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो हिस्से बनाइए: पहले गद्यांश का ऋण-संकट, फिर अपने विचार से आय और सुरक्षा बढ़ाने वाले उपाय।

1(छ). गद्यांश से दो मुहावरे चुनकर उनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का प्रयोग उसके रूढ़ भाव में किया जाता है; वाक्य से उसका अर्थ स्पष्ट होना चाहिए।
- उत्तर में गद्यांश के संबंधित कथन और उससे निकलने वाले अर्थ को जोड़कर समझाना आवश्यक है।

चरण 1: खून-पसीने की कमाई गद्यांश से लिया गया पहला मुहावरा है, खून-पसीने की कमाई। इसका अर्थ है अत्यधिक परिश्रम से अर्जित धन। वाक्य-प्रयोग: किसान ने अपनी खून-पसीने की कमाई से बेटी की पढ़ाई का खर्च उठाया। यहाँ कमाई का संबंध कठिन श्रम से है, इसलिए मुहावरे का भाव स्पष्ट होता है।

चरण 2: पैरों तले की ज़मीन खिसक जाना दूसरा मुहावरा है, पैरों तले की ज़मीन खिसक जाना। इसका अर्थ है अचानक गहरा आघात लगने पर सहारा छिन जाने जैसा अनुभव होना। वाक्य-प्रयोग: आग में अपनी सारी फसल जल जाने का समाचार सुनकर किसान के पैरों तले की ज़मीन खिसक गई। यह वाक्य अप्रत्याशित संकट से उत्पन्न आघात को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष दो मुहावरे और उनके वाक्य हैं: खून-पसीने की कमाई—मजदूर ने अपनी खून-पसीने की कमाई से घर बनाया। पैरों तले की ज़मीन खिसक जाना—नौकरी छूटने का समाचार सुनते ही उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक गई।

त्वरित सुझाव: मुहावरे गद्यांश से ही चुनिए और अपने वाक्य में ऐसी स्थिति रखिए जिससे उनका भाव स्पष्ट हो जाए।

1(ज). गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- इस गद्यांश में किसान की आर्थिक और सामाजिक दुर्दशा के अनेक कारण बताए गए हैं।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानें गद्यांश में किसान के परिश्रम और अन्नदाता होने का उल्लेख करते हुए उसकी अशिक्षा, संगठनहीनता, आपसी रंजिश तथा पूँजी की कमी बताई गई है। इसलिए इसका केंद्र केवल खेती की तकनीक या गाँवों का वर्णन नहीं, किसान की दयनीय स्थिति है।

चरण 2: शीर्षक का औचित्य समझें अंत में ऋण के बोझ और फसल नष्ट होने से किसान की विवशता सामने आती है। अतः ऐसा शीर्षक उचित होगा जो इन सभी समस्याओं को समेटे और पूरे गद्यांश का प्रतिनिधित्व करे।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है—भारतीय किसान की दुर्दशा।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय प्रत्येक अनुच्छेद में बार-बार आने वाले केंद्रीय विषय को पहचानें।

---

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाँहें फैलाए रोज़ मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं,
नव-नवीन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय
रोज-रोज मिलते हैं .....
और, मैं सोच रहा हूँ कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह है कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है,
और, वह ठीक चुनाव नहीं कर पाता है। [5 अंक]

2(क). कैसे कह सकते हैं कि यह काव्यांश किसी भी लेखक की समस्या से संबंधित है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में लेखक की रचना के लिए विषय चुनने की कठिनाई व्यक्त हुई है।
- कथ्य निर्धारित करने के लिए काव्यांश के सीधे कथन को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: लेखक का स्पष्ट उल्लेख देखें कवि कहता है कि आज के लेखक की कठिनाई विषयों की कमी नहीं है। इससे स्पष्ट है कि काव्यांश का संबंध लेखन की प्रक्रिया और उसके आरंभ में होने वाले विषय-चयन से है।

चरण 2: समस्या की व्यापकता समझें लेखक को जीवन में रोज नए दृश्य और अनेक विषय मिलते हैं। उनमें से सही विषय चुनना कठिन होता है। रचना के लिए विषय चुनने की यह दुविधा किसी भी लेखक के सामने आ सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष यह काव्यांश किसी भी लेखक की समस्या से संबंधित है, क्योंकि अनेक उपलब्ध विषयों में से उपयुक्त विषय का सही चुनाव करना हर लेखक के लिए कठिन हो सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लेखक का उल्लेख और विषयों के आधिक्य से उत्पन्न चयन की दुविधा दोनों जोड़ें।

2(ख). समस्या की विकरालता को कवि ने किस रूप में देखा है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक और बिंब अमूर्त समस्या को ठोस दृश्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं।
- काव्यांश में बढ़ते विकल्पों के द्वारा विषय-चयन की कठिनाई दिखाई गई है।

चरण 1: प्रयुक्त बिंब पहचानें कवि को पग-पग पर चौराहे और बाँहें फैलाए सौ राहें मिलती हैं। ये दृश्य लेखक के सामने उपस्थित अनेक विषयों और आकर्षक विकल्पों का संकेत हैं।

चरण 2: विस्तार का प्रभाव समझें इन राहों से शाखाएँ-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं और रोज नए विषय सामने आते हैं। इस निरंतर विस्तार के कारण चयन की समस्या कम होने के स्थान पर बढ़ती जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने समस्या की विकरालता को पग-पग पर मिलने वाले चौराहों, सौ-सौ राहों तथा उनसे लगातार निकलती शाखाओं-प्रशाखाओं के रूप में देखा है।

त्वरित सुझाव: विकरालता पूछे जाने पर केवल कठिनाई न लिखें; उसे व्यक्त करने वाले बिंब भी बताएँ।

2(ग). शाखाएँ-प्रशाखाएँ से कवि का क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग के अनुसार शब्दों का लाक्षणिक अर्थ ग्रहण करना भाव-बोध का आधार है।
- यहाँ शाखाएँ-प्रशाखाएँ रचना के लिए उपलब्ध विषयों के विस्तार का संकेत हैं।

चरण 1: वृक्ष के बिंब का अर्थ खोलें जिस प्रकार एक शाखा से अनेक छोटी शाखाएँ निकलती हैं, उसी प्रकार जीवन के एक विषय से अनेक संबंधित विषय और विचार उत्पन्न होते हैं। यहाँ वास्तविक पेड़ का वर्णन नहीं है।

चरण 2: काव्यांश से संबंध जोड़ें आगे नए रूप-दृश्यों वाले सौ-सौ विषय रोज मिलने की बात कही गई है। इसलिए शाखाओं-प्रशाखाओं का आशय निरंतर बढ़ती विषय-विविधता और उससे पैदा होते अनेक विकल्प हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शाखाएँ-प्रशाखाएँ से कवि का आशय एक विषय से निकलने वाले अनेक उपविषयों, विचारों और नई संभावनाओं से है, जो लेखक के सामने विकल्प बढ़ाते रहते हैं।

त्वरित सुझाव: किसी प्रतीक का अर्थ लिखते समय उसके तुरंत बाद की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करें।

2(घ). "पग-पग चौराहे मिलते हैं बाँहें फैलाए" का भाव स्पष्ट कीजिए [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव स्पष्ट करते समय दृश्य के पीछे निहित विचार को सरल शब्दों में बताया जाता है।
- चौराहे और राहें यहाँ जीवन तथा लेखन में मिलने वाले अनेक विकल्पों के प्रतीक हैं।

चरण 1: चौराहे का संकेत समझें चौराहे पर कई दिशाओं में जाने की संभावना होती है और यात्री को मार्ग चुनना पड़ता है। इसी प्रकार लेखक को हर कदम पर अनेक विषय और विचार मिलते हैं।

चरण 2: बाँहें फैलाने का भाव समझें बाँहें फैलाए राहें उन विषयों के आकर्षण को व्यक्त करती हैं। हर विषय लेखक को अपनी ओर खींचता है, इसलिए उसके लिए किसी एक दिशा या विषय पर निर्णय लेना कठिन हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का भाव है कि जीवन के प्रत्येक मोड़ पर लेखक के सामने अनेक आकर्षक विषय और संभावनाएँ आती हैं, जो उसे अपनी ओर बुलाती हैं तथा चयन की दुविधा पैदा करती हैं।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में चौराहे को अनेक विकल्प और बाँहें फैलाने को उनके आकर्षण से जोड़ें।

2(ङ). लेखक विषय का चुनाव ठीक से क्यों नहीं कर पाता? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण संबंधी प्रश्न में काव्यांश में दिए गए कारण को स्पष्ट करना चाहिए।
- विषयों का आधिक्य लेखक की चयन संबंधी उलझन का मुख्य कारण है।

चरण 1: समस्या का कारण पहचानें काव्यांश में स्पष्ट है कि लेखक के लिए विषयों की कमी नहीं है। रोज नए रूप-दृश्य वाले अनेक विषय सामने आते हैं और हर विषय से अन्य विचार भी निकलते रहते हैं।

चरण 2: चयन पर प्रभाव बताएँ इतने अधिक और आकर्षक विकल्पों में लेखक तय नहीं कर पाता कि किस विषय को रचना का आधार बनाए। अनेक दिशाओं में ध्यान बँटने से उसकी निर्णय लेने की कठिनाई बढ़ जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक विषय का ठीक चुनाव इसलिए नहीं कर पाता कि उसके सामने रोज नए और अनेक आकर्षक विषय आते हैं। विषयों का यही आधिक्य उसे उलझन में डाल देता है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में विषयों की कमी न लिखें; कवि ने कठिनाई का कारण उनका आधिक्य बताया है।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : भारत की प्रगति में युवाओं की भूमिका [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषयानुकूल शीर्षक, भूमिका, क्रमबद्ध विचार-विस्तार तथा उपसंहार आवश्यक हैं।
- विचारों को शिक्षा, रोजगार, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रनिर्माण के ठोस उदाहरणों से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा शीर्षक के बाद भूमिका में युवाशक्ति का महत्त्व बताएँ। मुख्य भाग में शिक्षा एवं कौशल, विज्ञान, उद्यम, सामाजिक सुधार और लोकतांत्रिक जिम्मेदारी को क्रम से रखें। अंत में अवसर और अनुशासन के समन्वय का संदेश दें।

चरण 2: विचारों को क्रमबद्ध करें युवाओं की ऊर्जा के साथ उनकी जिम्मेदारियों का उल्लेख भी आवश्यक है। केवल देशप्रेम के नारे देने के बजाय ईमानदार श्रम, नए समाधान, पर्यावरण संरक्षण, समानता और नागरिक भागीदारी जैसे कार्य प्रस्तुत करें। बेरोजगारी तथा उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता को भी संतुलित रूप में रखें।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श निबंध भारत की प्रगति में युवाओं की भूमिका

किसी देश का भविष्य उसकी युवा पीढ़ी के विचारों, श्रम और चरित्र से आकार लेता है। युवाओं में उत्साह, साहस और नई राह खोजने की क्षमता होती है। भारत की प्रगति के लिए इस शक्ति को सही दिशा देना आवश्यक है।

शिक्षा और कौशल युवाओं को देश के विकास का सक्रिय भागीदार बनाते हैं। शिक्षित युवा वैज्ञानिक अनुसंधान, चिकित्सा, कृषि और तकनीक में उपयोगी समाधान खोज सकते हैं। गाँवों में जल-संरक्षण, बेहतर खेती और डिजिटल सेवाओं का विस्तार करके वे विकास का लाभ अधिक लोगों तक पहुँचा सकते हैं। उद्यमिता अपनाकर युवा स्वयं रोजगार प्राप्त करने के साथ दूसरों के लिए भी अवसर बना सकते हैं।

राष्ट्र की प्रगति केवल आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं है। जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, निरक्षरता और अंधविश्वास दूर करने में भी युवाओं की बड़ी भूमिका है। वे स्वयं समानता का व्यवहार अपनाएँ और समाज को जागरूक करें। जरूरतमंद बच्चों को पढ़ाना, रक्तदान करना तथा आपदा में सहायता देना सेवा के सार्थक रूप हैं। स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण में उनकी नियमित भागीदारी भविष्य को सुरक्षित बना सकती है।

लोकतंत्र में युवाओं को जागरूक नागरिक बनना चाहिए। विवेकपूर्ण मतदान, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा और भ्रष्ट आचरण का विरोध उनकी जिम्मेदारी है। सामाजिक माध्यमों पर अपुष्ट सूचनाएँ फैलाने के बजाय तथ्य जाँचना और सभ्य संवाद करना भी आवश्यक है।

युवाओं से अपेक्षाएँ रखने के साथ उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार और उचित मार्गदर्शन मिलना चाहिए। युवा भी अनुशासन, परिश्रम और ईमानदारी को अपनाएँ। जब उनकी प्रतिभा को अवसर और राष्ट्रीय हित की दिशा मिलेगी, तब भारत की प्रगति अधिक समावेशी और स्थायी होगी।

चरण 4: निष्कर्ष भारत की उन्नति में युवाओं का योगदान ज्ञान, कौशल, उद्यम, सामाजिक सेवा और जिम्मेदार नागरिक आचरण के संयुक्त प्रयास से प्रभावी बनता है।

त्वरित सुझाव: निबंध के प्रत्येक मुख्य अनुच्छेद में युवाओं की एक भूमिका और उसका ठोस उपयोग जोड़ें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : हिंदी का भविष्य [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबंध में विषय की वर्तमान स्थिति, संभावनाओं, चुनौतियों और समाधान का क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है।
- भाषा का भविष्य उसके दैनिक प्रयोग, शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान और तकनीक में उपयोग तथा नई पीढ़ी के जुड़ाव पर निर्भर करता है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति निबंध का शीर्षक विषय के अनुरूप रखें। भूमिका में हिंदी की वर्तमान उपयोगिता स्पष्ट करें; फिर शिक्षा, संचार और तकनीक में उसकी संभावनाएँ बताएँ। चुनौतियों पर चर्चा करते हुए व्यावहारिक उपाय दें और अंत में संतुलित निष्कर्ष लिखें। सरल, शुद्ध भाषा तथा विचारों के बीच स्वाभाविक संबंध बनाए रखें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **हिंदी का भविष्य**

भाषा केवल विचार व्यक्त करने का साधन नहीं, समाज की स्मृति और संस्कृति की वाहक भी है। हिंदी भारत के अनेक क्षेत्रों में संवाद और संपर्क की महत्त्वपूर्ण भाषा है। उसके विशाल भाषिक समुदाय, समृद्ध साहित्य और बदलती संचार-व्यवस्था को देखकर कहा जा सकता है कि उसका भविष्य संभावनाओं से भरा है। किंतु इन संभावनाओं को उपलब्धि बनाने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति उसका जनजीवन से संबंध है। घरों, बाजारों, यात्राओं और सार्वजनिक जीवन में उसका व्यापक प्रयोग होता है। साहित्य, सिनेमा, रेडियो और दूरदर्शन ने भी उसे अनेक भाषिक समुदायों तक पहुँचाया है। इंटरनेट और मोबाइल के प्रसार ने हिंदी में लेखन, अध्ययन तथा संवाद के नए अवसर खोले हैं। अब लोग देवनागरी में संदेश लिख सकते हैं और अपनी रचनाएँ पाठकों तक पहुँचा सकते हैं।

फिर भी केवल मनोरंजन और सामान्य बातचीत तक सीमित रहकर कोई भाषा पूरी तरह विकसित नहीं हो सकती। उच्च शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, कानून और तकनीक में सरल तथा विश्वसनीय हिंदी सामग्री की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें और शिक्षकों को उपयोगी संसाधन मिलें तो हिंदी ज्ञान की सशक्त भाषा बन सकती है। अनुवाद, मौलिक लेखन और शब्दावली के सहज प्रयोग को प्रोत्साहन देना होगा।

हिंदी के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। कभी विदेशी भाषा बोलने को ही योग्यता का प्रमाण मान लिया जाता है और कभी शुद्धता के आग्रह में हिंदी को इतना कठिन बना दिया जाता है कि सामान्य पाठक दूर हो जाता है। इन दोनों प्रवृत्तियों से बचना चाहिए। दूसरी भाषाएँ सीखना उपयोगी है, पर अपनी भाषा के प्रति हीनभावना उचित नहीं। हिंदी का विकास अन्य भारतीय भाषाओं के सम्मान और उनसे आदान-प्रदान के साथ होना चाहिए।

विद्यालय, परिवार, प्रकाशक और संचार-माध्यम मिलकर नई पीढ़ी में हिंदी पढ़ने-लिखने की रुचि बढ़ा सकते हैं। पुस्तकालयों, साहित्यिक गतिविधियों और उपयोगी डिजिटल सामग्री का विस्तार इस दिशा में सहायक होगा। भाषा को रोजगार और व्यावहारिक कामकाज से जोड़ना भी आवश्यक है।

हिंदी का भविष्य केवल घोषणाओं से उज्ज्वल नहीं होगा। उसका सम्मान तभी सार्थक होगा जब हम उसमें अच्छा साहित्य रचें, ज्ञान उपलब्ध कराएँ और निर्भय होकर उसका प्रयोग करें। सहजता, समावेशिता और नए ज्ञान से जुड़ाव ही हिंदी को आने वाले समय की समर्थ भाषा बनाएँगे।

चरण 3: निष्कर्ष हिंदी का उज्ज्वल भविष्य उसके सहज प्रयोग, ज्ञान-विज्ञान में विस्तार और अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान से सुनिश्चित होगा।

त्वरित सुझाव: निबंध में केवल हिंदी की प्रशंसा न करें; उसकी दो चुनौतियाँ और उनके व्यावहारिक समाधान भी अवश्य जोड़ें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : विज्ञान और समाज [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबंध में विज्ञान के सामाजिक प्रभावों को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करते हुए लाभ और चुनौतियों का संतुलित विवेचन किया जाता है।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण का आधार जिज्ञासा, प्रमाण और तर्क हैं; वैज्ञानिक उपलब्धियों का उपयोग मानवीय मूल्यों के मार्गदर्शन में होना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और विषय-विस्तार शीर्षक के बाद भूमिका में विज्ञान और समाज का पारस्परिक संबंध बताएँ। मुख्य भाग में स्वास्थ्य, कृषि, संचार और दैनिक जीवन के उदाहरण दें। पर्यावरण, हथियारों तथा असमान पहुँच जैसी समस्याओं का उल्लेख करें। अंत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, उत्तरदायी प्रयोग और जनकल्याण की आवश्यकता स्पष्ट करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **विज्ञान और समाज**

मनुष्य की जिज्ञासा ने उसे प्रकृति को समझने और जीवन की कठिनाइयों को दूर करने की प्रेरणा दी है। इसी खोज की व्यवस्थित प्रक्रिया से विज्ञान विकसित हुआ। विज्ञान समाज से अलग कोई गतिविधि नहीं है। समाज की आवश्यकताएँ वैज्ञानिक खोजों को दिशा देती हैं और वैज्ञानिक उपलब्धियाँ समाज के जीवन, विचार तथा व्यवहार को बदलती हैं।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में विज्ञान का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। रोगों की पहचान, टीकाकरण, औषधियों और शल्य-चिकित्सा ने अनेक जीवन बचाए हैं। स्वच्छ जल और सफाई संबंधी वैज्ञानिक जानकारी ने रोगों की रोकथाम में सहायता की है। कृषि में बेहतर बीज, सिंचाई और खेती की उन्नत विधियों से उत्पादन बढ़ाने में मदद मिली है। मौसम की जानकारी किसानों और मछुआरों के लिए उपयोगी होती है।

यातायात और संचार ने दूरियों का अनुभव बदल दिया है। रेल, मोटर और विमान से आवागमन आसान हुआ है, जबकि टेलीफोन और इंटरनेट ने सूचना के आदान-प्रदान को तेज बनाया है। विद्यार्थी दूर स्थित ज्ञान-संसाधनों तक पहुँच सकते हैं और आपदा के समय सहायता का समन्वय किया जा सकता है। घरों तथा उद्योगों में मशीनों ने अनेक श्रमसाध्य काम सरल किए हैं।

विज्ञान हमें केवल सुविधाएँ ही नहीं देता, सोचने का तरीका भी सिखाता है। किसी बात को केवल परंपरा या अफवाह के आधार पर मान लेने के स्थान पर प्रमाण माँगना और तर्क से जाँचना वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। इससे अंधविश्वास, भेदभाव और निराधार भय का सामना करने में सहायता मिलती है। वैज्ञानिक सोच में नए प्रमाण मिलने पर अपनी धारणा सुधारने का साहस भी शामिल है।

लेकिन वैज्ञानिक साधनों का अविवेकपूर्ण उपयोग गंभीर समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है। विनाशकारी हथियार, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन मानवता के लिए खतरे हैं। तकनीकी सुविधाएँ यदि कुछ वर्गों तक सीमित रहें तो सामाजिक असमानता बढ़ सकती है। इसलिए किसी आविष्कार की सफलता का मूल्यांकन केवल उसके लाभ या गति से नहीं, उसके सामाजिक तथा पर्यावरणीय प्रभाव से भी होना चाहिए।

समाज का दायित्व है कि वैज्ञानिक शिक्षा सबको मिले और अनुसंधान जनकल्याण से जुड़े। वैज्ञानिकों, सरकार और नागरिकों को सुरक्षा, नैतिकता तथा प्रकृति के संरक्षण का ध्यान रखना चाहिए। विज्ञान की शक्ति तभी उपयोगी है जब वह मनुष्य की गरिमा और समूचे समाज की भलाई की रक्षा करे। तर्क के साथ संवेदना जुड़ने पर ही विज्ञान प्रगति का स्थायी आधार बन सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष विज्ञान समाज की उन्नति का प्रभावी साधन है; उसका उत्तरदायी और न्यायपूर्ण उपयोग ही उसकी उपलब्धियों को जनकल्याण में बदलता है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक लाभ के साथ ठोस उदाहरण दें और अंत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को नैतिक जिम्मेदारी तथा पर्यावरण से जोड़ें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : स्त्री शिक्षा और सामाजिक चेतना [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है। भूमिका, मुख्य विचार और उपसंहार मिलकर एक सुसंगत रचना बनाते हैं।
- स्त्री शिक्षा का संबंध केवल साक्षरता से नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, समान अवसर, विवेक और सामाजिक भागीदारी से भी है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक के बाद शिक्षा के महत्व से भूमिका आरंभ करेंगे। मुख्य भाग में परिवार, स्वास्थ्य, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूकता पर विचार रखेंगे। बाधाओं तथा उनके समाधान का उल्लेख करके समान अवसर प्रदान करने के आह्वान से निबंध समाप्त करेंगे। भाषा विचारप्रधान, स्पष्ट और अनुच्छेदों में विभाजित रहेगी।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **स्त्री शिक्षा और सामाजिक चेतना**

शिक्षा मनुष्य को अपने अधिकारों, कर्तव्यों और संभावनाओं का बोध कराती है। किसी समाज की प्रगति का वास्तविक आकलन तभी संभव है, जब उसमें स्त्रियों की स्थिति भी देखी जाए। आधी आबादी को शिक्षा से वंचित रखकर पूरा समाज विकसित नहीं हो सकता। इसलिए स्त्री शिक्षा व्यक्तिगत उन्नति के साथ सामाजिक चेतना का भी आधार है।

शिक्षित स्त्री अपने जीवन से जुड़े निर्णय अधिक समझदारी से ले सकती है। वह स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण और बच्चों की शिक्षा के महत्व को पहचानती है। परिवार में उसकी जागरूक उपस्थिति अगली पीढ़ी को संवेदनशील और विवेकशील बनाने में सहायक होती है। किंतु स्त्री शिक्षा का मूल्य केवल इस आधार पर नहीं आँकना चाहिए कि उससे परिवार को लाभ होता है। स्त्री स्वयं एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है और शिक्षा पाना उसका अपना अधिकार है।

शिक्षा आर्थिक आत्मनिर्भरता के अवसर बढ़ाती है। रोजगार, स्वरोजगार और व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाएँ अपनी क्षमताओं का उपयोग कर सकती हैं। आय के साधन उपलब्ध होने पर उनमें आत्मविश्वास आता है और परिवार तथा समाज के निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ती है। शिक्षा उन्हें सार्वजनिक जीवन, प्रशासन, विज्ञान, साहित्य और अन्य क्षेत्रों में योगदान देने का अवसर भी देती है।

सामाजिक चेतना का अर्थ है समाज की समस्याओं को पहचानना और उनके समाधान के लिए जिम्मेदारी अनुभव करना। शिक्षित महिलाएँ बाल विवाह, दहेज, लैंगिक भेदभाव और अंधविश्वास जैसी कुरीतियों पर प्रश्न उठा सकती हैं। वे अपने अधिकारों की जानकारी प्राप्त करके अन्य महिलाओं को भी जागरूक कर सकती हैं। इस प्रकार शिक्षा अन्याय को चुपचाप सहने की प्रवृत्ति के स्थान पर संवाद और परिवर्तन की शक्ति उत्पन्न करती है।

फिर भी अनेक बालिकाओं की पढ़ाई गरीबी, घरेलू काम के बोझ, असुरक्षा और रूढ़िवादी सोच के कारण छूट जाती है। केवल विद्यालय खोल देना पर्याप्त नहीं है। सुरक्षित आवागमन, स्वच्छ शौचालय, छात्रवृत्ति और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की व्यवस्था भी आवश्यक है। परिवारों को बेटियों के लिए वही अवसर सुनिश्चित करने चाहिए जो वे बेटों को देते हैं। घरेलू जिम्मेदारियों का न्यायपूर्ण बँटवारा भी उनकी पढ़ाई जारी रखने में मदद करेगा।

स्त्री शिक्षा से उत्पन्न चेतना पूरे समाज को अधिक न्यायपूर्ण और मानवीय बनाती है। इसके लिए सरकार, विद्यालय, परिवार और नागरिकों को मिलकर प्रयास करना होगा। जब हर बालिका निर्भय होकर पढ़ सकेगी और अपनी योग्यता के अनुसार आगे बढ़ सकेगी, तभी समानता का विचार हमारे सामाजिक व्यवहार में उतर सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष स्त्री शिक्षा आत्मनिर्भरता, समान अधिकार और सामाजिक सुधार का आधार है। निबंध में इसी केंद्रीय विचार को भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और समाधानपूर्ण उपसंहार के माध्यम से विकसित किया गया है।

त्वरित सुझाव: स्त्री शिक्षा पर लिखते समय परिवार को होने वाले लाभ के साथ स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व, अधिकार और निर्णय क्षमता का उल्लेख अवश्य करें।

4. 'जल ही जीवन है' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय को रोचक आरंभ, मानवीय प्रसंग, चित्रात्मक भाषा और तथ्यपरक विवेचन के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य पाठक को जानकारी देने के साथ विषय से संवेदनात्मक रूप से जोड़ना है।
- जल जीवन की मूल आवश्यकता है। जल संकट के कारणों और संरक्षण के व्यावहारिक उपायों को एक प्रभावशाली फ़ीचर में दैनिक जीवन से जोड़कर दिखाया जा सकता है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना आकर्षक शीर्षक और लेखक का नाम देंगे। किसी घरेलू दृश्य से शुरुआत करके पानी का महत्व स्पष्ट करेंगे। फिर जल संकट के कारण, उसके मानवीय परिणाम और वर्षाजल संचयन जैसे उपाय रखेंगे। अंत में पाठक को अपने व्यवहार में परिवर्तन के लिए प्रेरित करेंगे। बिना स्रोत के आँकड़े या किसी वास्तविक व्यक्ति का मनगढ़ंत कथन नहीं जोड़ेंगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फ़ीचर **हर बूँद में धड़कता जीवन**

लेखक : अजय

सुबह आँख खुली, नल खोला और पानी की जगह हवा की आवाज सुनाई दी। रसोई में चाय बननी है, बच्चों को विद्यालय जाना है और आँगन में रखे पौधे मुरझाए खड़े हैं। एक खाली बाल्टी अचानक बता देती है कि हमारे रोजमर्रा के जीवन का कितना बड़ा हिस्सा पानी पर टिका है। यही दृश्य हमें 'जल ही जीवन है' का वास्तविक अर्थ समझाता है।

पानी केवल प्यास नहीं बुझाता। खेतों में लहलहाती फसल, पशुओं का जीवन, भोजन की तैयारी और घर की सफाई, सब उसके सहारे चलते हैं। नदियाँ और तालाब असंख्य जीवों के घर भी हैं। जल का संकट इसलिए केवल मनुष्य की असुविधा नहीं, पूरे प्राकृतिक परिवेश के सामने खड़ी चुनौती है।

हम अक्सर पानी की उपलब्धता को सहज मान लेते हैं। कहीं नल खुला रह जाता है, कहीं पाइप का रिसाव अनदेखा होता है और कहीं साफ पानी से सड़क धोई जाती है। दूसरी ओर कई परिवारों को अपनी दैनिक जरूरत का पानी लाने में बहुत समय लगाना पड़ता है। प्रदूषित जलस्रोत, तालाबों पर अतिक्रमण और भूजल का अनियंत्रित दोहन इस कठिनाई को बढ़ाते हैं। बारिश का पानी भी जब धरती में उतरने के बजाय तेजी से बह जाता है, तो अगले मौसम के लिए हमारा जल भंडार कमजोर पड़ता है।

समाधान की शुरुआत अपने घर से हो सकती है। टपकते नल की मरम्मत, जरूरत भर पानी का उपयोग और अनुपयुक्त कामों में पेयजल की बर्बादी रोकना छोटे पर उपयोगी कदम हैं। साफ बचा हुआ पानी पौधों में दिया जा सकता है। विद्यालयों और आवासीय परिसरों में छतों से वर्षाजल एकत्र करने की व्यवस्था अपनाई जा सकती है। स्थानीय तालाबों और जलमार्गों की रक्षा करना भी उतना ही जरूरी है।

जल संरक्षण केवल किसी विभाग की जिम्मेदारी मानकर छोड़ देने से काम नहीं चलेगा। नागरिकों, संस्थाओं और प्रशासन को साथ आना होगा। आज बचाई गई बूँद कल किसी की प्यास, किसी खेत की हरियाली और किसी पक्षी का जीवन बन सकती है। अगली बार नल बंद करते समय याद रखें, हमारी सावधानी में आने वाले कल की उम्मीद छिपी है।

चरण 3: निष्कर्ष रोचक घरेलू दृश्य से आरंभ हुआ यह फ़ीचर पानी के महत्व, संकट और संरक्षण को मानवीय अनुभव से जोड़ता है तथा पाठक को जिम्मेदार व्यवहार के लिए प्रेरित करता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर में केवल उपदेश न दें; खाली बाल्टी या टपकते नल जैसा जीवंत दृश्य लेकर विषय खोलें और अंत में करने योग्य उपाय सुझाएँ।

अथवा

4. 'मेरा देश मेरा कर्त्तव्य' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय का तथ्यपरक, रोचक और मानवीय प्रस्तुतीकरण है। 'मेरा देश मेरा कर्त्तव्य' में नागरिक जीवन के छोटे प्रसंगों से देश के प्रति उत्तरदायित्व स्पष्ट करना उपयुक्त है।
- आकर्षक शीर्षक, दृश्यात्मक आरंभ, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और प्रभावपूर्ण अंत फ़ीचर को पठनीय बनाते हैं। इसमें केवल नारे गिनाने के स्थान पर व्यवहार से जुड़े उदाहरण देने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति तय करें शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें। आरंभ किसी परिचित दृश्य से करें, जैसे राष्ट्रीय पर्व के अगले दिन सड़क पर पड़ा झंडा। फिर उस दृश्य से दैनिक नागरिक कर्तव्यों की चर्चा जोड़ें। भाषा सहज, चित्रात्मक और संवेदनापूर्ण रहे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाएँ राष्ट्रीय सम्मान से आरंभ करके स्वच्छता, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, जल और बिजली की बचत, नियमों का पालन तथा सामाजिक सद्भाव तक विचार बढ़ाएँ। विद्यार्थी का कर्त्तव्य भी जोड़ें, ताकि देशप्रेम पाठक के अपने जीवन से जुड़ सके। अंत में व्यक्तिगत जिम्मेदारी स्वीकार करने का संदेश दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श फ़ीचर **मेरा देश मेरा कर्त्तव्य**

लेखक: अजय

सुबह विद्यालय जाते समय सड़क किनारे पड़ा कागज़ का तिरंगा दिखाई दिया। कल तक जो झंडा उत्साह से लहराया जा रहा था, आज उसे उठाने वाला कोई नहीं था। एक बच्चे ने झुककर उसे उठाया और सुरक्षित रख लिया। देशप्रेम का अर्थ शायद इसी छोटे से काम में छिपा है।

देश केवल मानचित्र पर खिंची सीमाओं का नाम नहीं; वह हमारे आसपास के लोगों, नदियों, खेतों, भाषाओं और साझा सपनों से बनता है। इसलिए देश के प्रति कर्त्तव्य केवल राष्ट्रीय पर्वों पर गीत गाने तक सीमित नहीं हो सकता। सड़क पर कूड़ा न फेंकना, पानी व्यर्थ न बहाना और बिजली बचाना भी देशसेवा है।

बस की सीट फाड़ने या सार्वजनिक दीवार पर लिखने से नुकसान किसी अनजान संस्था का नहीं, हम सबका होता है। यातायात के नियमों का पालन, ईमानदारी से काम और जरूरतमंद की सहायता समाज में भरोसा पैदा करते हैं। धर्म, भाषा या जाति के कारण किसी से भेदभाव न करना हमारी साझी संस्कृति को मजबूत बनाता है।

विद्यार्थियों के लिए मन लगाकर पढ़ना, कौशल सीखना और प्रश्न पूछने की आदत विकसित करना भविष्य के भारत की तैयारी है। गलत सूचना आगे भेजने से पहले उसकी सत्यता जाँचना भी आज का जरूरी नागरिक व्यवहार है।

हमें अक्सर लगता है कि देश बदलने का काम किसी और का है। पर बदलाव की पहली जगह हमारा अपना घर, विद्यालय और मोहल्ला है। जब हर व्यक्ति अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाएगा, तभी तिरंगे का सम्मान हमारे व्यवहार में भी दिखाई देगा।

चरण 4: निष्कर्ष यह फ़ीचर एक छोटे मानवीय प्रसंग से आरंभ होकर दैनिक नागरिक कर्तव्यों का महत्व समझाता है और अपने आचरण से देश के निर्माण में योगदान देने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: देशप्रेम के विषय पर फ़ीचर लिखते समय एक सजीव दृश्य से शुरुआत करें और प्रत्येक बड़े विचार को दैनिक जीवन के ठोस उदाहरण से जोड़ें।

5. अनियमित विद्युत आपूर्ति के कारण होने वाली असुविधाओं और बिजली चोरी की हो रही घटनाओं की सूचना देते हुए विद्युत विभाग के वितरण प्रबंधक को पत्र लिखिए और सुझाव भी दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत पत्र में संबंधित अधिकारी को समस्या की स्पष्ट सूचना, उसके प्रभाव और व्यावहारिक समाधान दिए जाते हैं। भाषा विनम्र, तथ्यपरक और संक्षिप्त होनी चाहिए।
- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, अनुच्छेदों में मुख्य कथ्य तथा समापन के साथ नाम आवश्यक हैं।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित करें पत्र विद्युत विभाग के वितरण प्रबंधक को संबोधित होगा। विषय में अनियमित विद्युत आपूर्ति और बिजली चोरी दोनों लिखें। मुख्य कथ्य में पहले क्षेत्र की समस्या बताएँ, फिर उससे उत्पन्न असुविधाएँ और अंत में कार्रवाई के सुझाव दें।

चरण 2: आवश्यक विवरण और सुझाव चुनें अचानक बिजली जाने से पढ़ाई, पानी की आपूर्ति और घरेलू काम प्रभावित होने का उल्लेख करें। बिजली चोरी के मामले में किसी व्यक्ति पर अपुष्ट आरोप लगाने के बजाय विभाग से जाँच का आग्रह करें। नियमित निरीक्षण, तारों और ट्रांसफॉर्मर की मरम्मत, शिकायत केंद्र तथा कटौती की पूर्व सूचना जैसे उपाय सुझाएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 24, विकास नगर

नई दिल्ली

15 जुलाई, 2017

सेवा में

वितरण प्रबंधक

विद्युत विभाग

नई दिल्ली

विषय: अनियमित विद्युत आपूर्ति और बिजली चोरी के संबंध में।

महोदय,

मैं विकास नगर का निवासी हूँ। आपके ध्यान में लाना चाहता हूँ कि हमारे क्षेत्र में पिछले कई सप्ताह से विद्युत आपूर्ति अत्यंत अनियमित है। दिन और रात में अचानक कई बार बिजली चली जाती है। आपूर्ति बहाल होने का समय भी निश्चित नहीं रहता। कभी-कभी वोल्टेज में उतार-चढ़ाव से घरेलू उपकरणों के खराब होने की आशंका बनी रहती है।

इस स्थिति से विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित हो रही है। पानी की मोटर न चलने से पेयजल की कठिनाई होती है और गर्मी में वृद्धों तथा छोटे बच्चों को विशेष परेशानी उठानी पड़ती है। छोटे दुकानदारों के काम पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

क्षेत्र में कुछ स्थानों पर खुले तारों से अवैध कनेक्शन जोड़कर बिजली लेने की घटनाएँ भी देखने में आती हैं। कृपया विभागीय दल भेजकर इनकी जाँच कराएँ। ऐसे असुरक्षित कनेक्शन दुर्घटना का कारण बन सकते हैं और वितरण व्यवस्था पर अतिरिक्त भार भी डालते हैं।

मेरा सुझाव है कि तारों, ट्रांसफॉर्मर और अन्य उपकरणों की नियमित जाँच तथा आवश्यक मरम्मत कराई जाए। बिजली चोरी रोकने के लिए नियमित निरीक्षण हो और दोषियों पर नियमानुसार कार्रवाई की जाए। आवश्यक कटौती की सूचना पहले दी जाए तथा शिकायत दर्ज कराने और उसकी स्थिति जानने की सुलभ व्यवस्था उपलब्ध हो। नागरिकों को सुरक्षित और वैध कनेक्शन के प्रति जागरूक भी किया जाए।

आशा है कि आप शीघ्र कार्रवाई करके क्षेत्र में नियमित और सुरक्षित विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

अजय कुमार

निवासी, विकास नगर

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में आपूर्ति की अनियमितता से उत्पन्न असुविधाएँ, बिजली चोरी की जाँच का अनुरोध और व्यवस्था सुधारने के

ठोस सुझाव औपचारिक तथा विनम्र शैली में दिए गए हैं।

त्वरित सुझाव: शिकायत पत्र में केवल कठिनाई न गिनाएँ; संबंधित अधिकारी से अपेक्षित कार्रवाई और कम से कम दो व्यावहारिक सुधार भी स्पष्ट लिखें।

अथवा

5. आपके निकट के चिकित्सालय में उपलब्ध सुविधाओं पर संतोष व्यक्त करते हुए चिकित्सा अधीक्षक को एक पत्र लिखिए तथा उसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए दो सुझाव भी दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में विषय स्पष्ट, भाषा विनम्र तथा विवरण तथ्यपरक होना चाहिए।
- पत्र में उपलब्ध सुविधाओं के प्रति संतोष व्यक्त करने के साथ उपयोगिता बढ़ाने वाले ठीक दो सुझाव देने हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर चिकित्सा अधीक्षक को संबोधित करेंगे। विषय में चिकित्सालय की सेवाओं की प्रशंसा और सुधार के सुझाव का उल्लेख होगा। मुख्य भाग में स्वच्छता, कर्मचारियों के व्यवहार तथा उपचार की व्यवस्था की प्रशंसा करेंगे। फिर पंजीकरण और विशेषज्ञ सेवाओं से संबंधित दो व्यावहारिक सुझाव देंगे। अंत में धन्यवाद और प्रेषक का नाम लिखेंगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, शांति विहार
नई दिल्ली।
20 जुलाई, 2017
सेवा में,
चिकित्सा अधीक्षक महोदय,
राजकीय चिकित्सालय,
शांति विहार, नई दिल्ली।
विषय: चिकित्सालय की सुविधाओं पर संतोष एवं सुधार के सुझाव।
महोदय,
मैं आपके चिकित्सालय के निकट रहने वाला नागरिक हूँ। पिछले सप्ताह अपने पिता के उपचार के सिलसिले में वहाँ आया था। चिकित्सालय की स्वच्छता, चिकित्सकों का विनम्र व्यवहार तथा परिचारकों की तत्परता देखकर बहुत संतोष हुआ। दवाओं के वितरण और जाँच की सुव्यवस्थित व्यवस्था से रोगियों को काफी सुविधा मिल रही है। जरूरतमंद लोगों को समय पर उपचार उपलब्ध कराने के लिए आपका पूरा दल प्रशंसा का पात्र है।
चिकित्सालय को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए मैं दो सुझाव देना चाहता हूँ। पहला, पंजीकरण के लिए ऑनलाइन समय लेने की सुविधा शुरू की जाए, जिससे रोगियों को लंबी कतारों में प्रतीक्षा न करनी पड़े। दूसरा, विशेषज्ञ चिकित्सकों की सायंकालीन ओपीडी भी आरंभ की जाए, जिससे कामकाजी लोग अपने कार्य के बाद परामर्श ले सकें।
आशा है, आप इन सुझावों पर विचार करेंगे और चिकित्सालय की जनहितकारी सेवाओं का विस्तार करेंगे। उत्तम सुविधाओं के लिए आपको और समस्त कर्मचारियों को धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में चिकित्सा सुविधाओं पर संतोष, विनम्र प्रशंसा तथा पंजीकरण और विशेषज्ञ परामर्श से संबंधित दो स्पष्ट सुझाव दिए गए हैं।

त्वरित सुझाव: पत्र पूरा करने के बाद जाँचें कि पता, दिनांक, विषय और समापन के साथ ठीक दो उपयोगी सुझाव भी आए हैं।

6(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'वाचडॉग पत्रकारिता' से क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता का एक प्रमुख दायित्व लोकतंत्र में जनहित की रक्षा और सत्ता को जवाबदेह बनाना है।
- वाचडॉग का अर्थ निगरानी रखने वाला प्रहरी है।

चरण 1: अवधारणा समझें वाचडॉग पत्रकारिता में पत्रकार सरकार, प्रशासन तथा अन्य शक्तिशाली संस्थाओं के कामकाज पर निगरानी रखता है। वह केवल उनके वक्तव्यों को दोहराता नहीं, बल्कि काम और दावों की तथ्यपरक जाँच करता है।

चरण 2: जनहित से संबंध बताएँ भ्रष्टाचार, अनियमितता, अधिकारों के दुरुपयोग और जनविरोधी कार्यों का पर्दाफाश करके यह पत्रकारिता जनता को सचेत करती है। इस प्रकार वह लोकतंत्र के सजग प्रहरी की भूमिका निभाती है।

चरण 3: निष्कर्ष सत्ता और प्रशासन के कामकाज की निगरानी कर उनके भ्रष्टाचार, अनियमितताओं तथा जनविरोधी कार्यों को उजागर करने वाली पत्रकारिता वाचडॉग पत्रकारिता कहलाती है।

त्वरित सुझाव: वाचडॉग की परिभाषा में निगरानी, सत्ता की जवाबदेही और जनहित की रक्षा—ये तीन बातें जोड़ें।

6(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'फ़ोन इन' क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में ताजा सूचना के लिए संवाददाता से सीधा संपर्क किया जाता है।
- फ़ोन इन में सूचनाओं का संप्रेषण टेलीफोन के माध्यम से होता है।

चरण 1: संपर्क की विधि पहचानें समाचार प्रसारण के दौरान एंकर घटनास्थल पर मौजूद संवाददाता अथवा संबंधित व्यक्ति से फोन पर संपर्क करता है। वह व्यक्ति घटना का ताजा विवरण देता है और एंकर के प्रश्नों के उत्तर भी दे सकता है।

चरण 2: प्रसारण का स्वरूप स्पष्ट करें फोन पर प्राप्त यह बातचीत या विवरण समाचार के साथ दर्शकों को सुनाया जाता है। इससे घटनास्थल के नवीनतम हालात तुरंत बताए जा सकते हैं। इसमें संवाददाता की आवाज मुख्य होती है; उसका कैमरे के सामने दिखाई देना अनिवार्य नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार प्रसारण के दौरान संवाददाता या संबंधित व्यक्ति से टेलीफोन पर संपर्क करके उसका सीधा विवरण अथवा बातचीत प्रसारित करना फ़ोन इन कहलाता है।

त्वरित सुझाव: फ़ोन इन का उत्तर देते समय फोन द्वारा संपर्क और समाचार में सीधे प्रसारित विवरण का उल्लेख अवश्य करें।

6(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : संपादक का मुख्य कार्य क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादन में प्राप्त सामग्री का चयन, संशोधन और प्रकाशन के लिए प्रस्तुतीकरण किया जाता है।
- संपादक समाचार-पत्र की सामग्री की गुणवत्ता और उपयुक्तता के लिए उत्तरदायी होता है।

चरण 1: मुख्य जिम्मेदारी बताएँ संपादक का मुख्य कार्य समाचार-पत्र में प्रकाशित होने वाली सामग्री का चयन और संपादन करना है। वह समाचारों के महत्त्व, विश्वसनीयता और पाठकों की रुचि के आधार पर तय करता है कि कौन-सी सामग्री प्रकाशित की जाए।

चरण 2: संपादन का उद्देश्य स्पष्ट करें चुनी हुई सामग्री के तथ्य, भाषा और प्रस्तुति की जाँच कर उसे स्पष्ट, शुद्ध और पठनीय बनाया जाता है। संपादक यह भी देखता है कि सामग्री पत्र की संपादकीय नीति और जनहित के अनुरूप हो।

चरण 3: निष्कर्ष संपादक का मुख्य कार्य प्रकाशन के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन और संपादन करके उसकी तथ्यात्मक शुद्धता, भाषा तथा प्रस्तुति सुनिश्चित करना है।

त्वरित सुझाव: संपादक का कार्य केवल गलतियाँ सुधारना न लिखें; सामग्री का चयन और प्रकाशन योग्य बनाना भी जोड़ें।

6(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'इंट्रो' किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार के आरंभ में उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना रखी जाती है।
- इंट्रो समाचार का शुरुआती अनुच्छेद होता है, जो मुख्य बात को संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

चरण 1: इंट्रो की स्थिति पहचानें समाचार के पहले अनुच्छेद को इंट्रो या मुखड़ा कहते हैं। यह पाठक को आरंभ में ही बताता है कि समाचार का सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य क्या है। इसीलिए इसे लिखते समय गौण विवरणों के बजाय प्रमुख सूचना को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 2: उसका उद्देश्य बताएँ एक अच्छा इंट्रो संक्षिप्त, स्पष्ट और प्रभावपूर्ण होता है। उसमें घटना के आवश्यक पक्ष आते हैं, ताकि पाठक समाचार का मूल आशय समझ सके और आगे पढ़ने के लिए प्रेरित हो। विस्तृत विवरण बाद के अनुच्छेदों में दिए जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार का वह प्रारंभिक अनुच्छेद, जिसमें घटना की सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना संक्षेप में दी जाती है, इंट्रो या मुखड़ा कहलाता है।

त्वरित सुझाव: इंट्रो को शीर्षक न समझें; वह समाचार का पहला अनुच्छेद है, जिसमें सबसे जरूरी सूचना होती है।

6(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'प्रिंट मीडिया' के कोई दो लाभ लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ आदि मुद्रित सामग्री प्रिंट मीडिया के अंतर्गत आती हैं।
- इसके लाभों में पाठक को पढ़ने की स्वतंत्रता और सामग्री का सुरक्षित संदर्भ शामिल हैं।

चरण 1: अपनी गति से पढ़ने का लाभ पाठक मुद्रित सामग्री को अपनी सुविधा के समय और अपनी गति से पढ़ सकता है। किसी कठिन या महत्त्वपूर्ण अंश को समझने के लिए वह रुक सकता है और उसे दोबारा पढ़ सकता है। इससे विषय को ठीक प्रकार से समझने में सहायता मिलती है।

चरण 2: संदर्भ के लिए सुरक्षित रखने का लाभ समाचार-पत्र या पत्रिका की उपयोगी सामग्री को काटकर अथवा पूरा अंक सँभालकर भविष्य के लिए रखा जा सकता है। जरूरत पड़ने पर पाठक उसी सूचना को फिर देख सकता है और उसका संदर्भ ले सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिंट मीडिया के दो लाभ हैं: पाठक सामग्री को अपनी सुविधा और गति से बार-बार पढ़ सकता है तथा उसे भविष्य के संदर्भ के लिए सुरक्षित रख सकता है।

त्वरित सुझाव: दो लाभ अलग-अलग लिखें: पढ़ने के समय और गति की स्वतंत्रता तथा भविष्य के लिए सामग्री का संग्रह।

---

7. "बढ़ते वृद्धाश्रम" विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय का तथ्यपरक और विचारपूर्ण विवेचन है। इसमें उपयुक्त शीर्षक, लेखक का नाम, विषय की भूमिका, कारण, प्रभाव तथा समाधान क्रमबद्ध रूप में आते हैं।
- वृद्धाश्रमों पर लिखते समय बुजुर्गों की गरिमा, पारिवारिक उत्तरदायित्व और आवश्यक संस्थागत देखभाल, तीनों पक्षों को संतुलित ढंग से रखना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और विषय-विस्तार शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें। भूमिका में बढ़ते वृद्धाश्रमों को बदलते सामाजिक संबंधों से जोड़ें। मुख्य भाग में एकल परिवार, रोजगार के लिए पलायन, समयाभाव और संवेदनहीनता पर विचार करें। सभी वृद्धाश्रमों को एक जैसा न बताएं; कुछ बुजुर्ग स्वेच्छा से या विशेष देखभाल के लिए भी वहाँ रहते हैं। अंत में परिवार, समाज और संस्थाओं की साझी जिम्मेदारी स्पष्ट करें।

चरण 2: पूर्ण नमूना आलेख **बढ़ते वृद्धाश्रम**

लेखक : अभिषेक

बुजुर्ग किसी परिवार की स्मृतियों और अनुभवों की धरोहर होते हैं। जिन हाथों ने बच्चों को चलना सिखाया, उन्हीं हाथों को बुढ़ापे में सहारे की आवश्यकता होती है। ऐसे में वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या हमें अपने पारिवारिक संबंधों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

संयुक्त परिवारों का विघटन, नौकरी के लिए दूर जाना और महानगरों की व्यस्त जीवनचर्या इस स्थिति के प्रमुख कारण हैं। कभी आर्थिक कठिनाइयाँ तो कभी वृद्धों को बोझ समझने की प्रवृत्ति उन्हें परिवार से दूर कर देती है। अकेलापन और उपेक्षा उनके शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

वृद्धाश्रमों की उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता। निराश्रित बुजुर्गों को वहाँ भोजन, सुरक्षा, चिकित्सा और साथ मिल सकता है। कुछ वृद्ध अपनी इच्छा से भी ऐसे संस्थानों को चुनते हैं। फिर भी किसी सुविधा को परिवार के स्नेह का पूरा विकल्प नहीं माना जा सकता। संस्थानों में सम्मानपूर्ण व्यवहार, स्वच्छता और उचित देखभाल अनिवार्य हैं।

समाधान केवल नए वृद्धाश्रम खोलना नहीं है। परिवार बुजुर्गों को निर्णयों में शामिल करें, उनके साथ समय बिताएँ और उनकी आवश्यकताओं को समझें। समाज सामुदायिक देखभाल तथा नियमित संवाद की व्यवस्था विकसित करे। वृद्धों की सेवा दया नहीं, हमारे संबंधों और उत्तरदायित्व की पहचान है।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख वृद्धाश्रमों के बढ़ने के सामाजिक कारणों, उनकी आवश्यक भूमिका और बुजुर्गों के प्रति पारिवारिक उत्तरदायित्व को संतुलित रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: आलेख में केवल समस्या गिनाने के बजाय कारण, प्रभाव और व्यावहारिक समाधान को अलग अनुच्छेदों में जोड़ें।

अथवा

7. "नारी संरक्षण" विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में सामाजिक विषय का क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है। शीर्षक और लेखक के नाम के बाद भूमिका, मुख्य विचार तथा समाधानयुक्त समापन दिया जाता है।
- नारी संरक्षण का आशय उसकी सुरक्षा, सम्मान, स्वतंत्रता और समान अवसरों की रक्षा से है। संरक्षण के नाम पर उसकी शिक्षा, आवाजाही या निर्णय लेने की स्वतंत्रता को सीमित करना उचित नहीं है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति भूमिका में नारी के सम्मान को समाज की प्रगति से जोड़ें। मुख्य भाग में हिंसा, भेदभाव और असुरक्षा की समस्याएँ रखें। शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, संवेदनशील पारिवारिक संस्कार और प्रभावी सहायता व्यवस्था के उपाय सुझाएँ। भाषा

संयत रखें और निष्कर्ष में स्त्री तथा पुरुष की साझी सामाजिक जिम्मेदारी सामने लाएँ।

चरण 2: पूर्ण नमूना आलेख **नारी संरक्षण**
लेखिका : अनामिका
किसी समाज की प्रगति का वास्तविक माप उसके नागरिकों की सुरक्षा और गरिमा है। नारी परिवार, कार्यस्थल और सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फिर भी अनेक महिलाएँ हिंसा, भेदभाव और असुरक्षा का सामना करती हैं। इसलिए नारी संरक्षण सामाजिक चिंता का आवश्यक विषय है।

संरक्षण का अर्थ महिलाओं को घर की सीमाओं में बाँध देना नहीं है। उसका अर्थ ऐसा वातावरण बनाना है जिसमें वे निर्भय होकर पढ़ सकें, काम कर सकें और अपने जीवन के निर्णय ले सकें। लड़कियों की शिक्षा रोकना, उनके विचारों को दबाना तथा अवसरों में भेदभाव करना उनकी क्षमता को अवरुद्ध करता है।

इस स्थिति को बदलने की शुरुआत परिवार से होनी चाहिए। बेटियों और बेटों को समान अवसर मिलें तथा बचपन से परस्पर सम्मान सिखाया जाए। विद्यालय संवेदनशीलता और समानता का वातावरण विकसित करें। शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस देती हैं।

सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन, कार्यस्थलों पर शिकायत की विश्वसनीय व्यवस्था और संकट में शीघ्र सहायता भी आवश्यक हैं। पीड़ित महिला को दोष देने के बजाय उसका साथ देना समाज का दायित्व है। संबंधित संस्थाएँ शिकायतों को गंभीरता से सुनें और उचित कार्रवाई करें।

नारी संरक्षण केवल महिलाओं का विषय नहीं, पूरे समाज की जिम्मेदारी है। सुरक्षा, समानता और स्वतंत्रता जब साथ आएँगी, तभी सम्मानपूर्ण तथा न्यायपूर्ण समाज का निर्माण होगा।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख नारी की सुरक्षा को उसकी गरिमा, समान अधिकारों और स्वतंत्रता से जोड़ता है तथा परिवार, समाज और संस्थाओं की साझा जिम्मेदारी स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: नारी संरक्षण लिखते समय सुरक्षा के साथ शिक्षा, समान अवसर और निर्णय की स्वतंत्रता को अवश्य जोड़ें।

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ।
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ।।
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।। [8 अंक]

8(क). 'स्नेह-सुरा का पान' से कवि का क्या आशय है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में स्नेह को सुरा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ सुरा वास्तविक मदिरा नहीं, प्रेम से मिलने वाली तन्मयता और मस्ती का संकेत है।
- किसी काव्यात्मक पद का आशय उसके संदर्भ से समझना चाहिए। आगे आने वाला अपने मन का गान कवि के आंतरिक भावलोक को स्पष्ट करता है।

चरण 1: पद का भाव समझें 'स्नेह-सुरा का पान' का आशय प्रेमरूपी मदिरा का रस लेना है। कवि का हृदय स्नेह से परिपूर्ण है और वह प्रेम की अनुभूति में मग्न रहता है। जैसे सुरा के प्रभाव से व्यक्ति मस्त हो जाता है, वैसे ही प्रेम कवि को आत्मविभोर करता है। यहाँ पीने का उल्लेख प्रतीकात्मक है।

चरण 2: काव्यांश से आशय की पुष्टि करें कवि अपने मन का गान करने की बात कहता है। इससे स्पष्ट है कि उसके गीत बाहरी प्रशंसा की अपेक्षा निजी अनुभूतियों से जन्म लेते हैं। स्नेह की यह मस्ती उसके हृदय को सरस बनाती है और उसकी कविता को भावपूर्ण स्वर

देती है। इसलिए इस पद में प्रेम की गहरी अनुभूति और उसमें डूबे रहने का भाव प्रमुख है।

चरण 3: निष्कर्ष 'स्नेह-सुरा का पान' से कवि का आशय प्रेम की अनुभूति में डूबकर मस्त और आत्मविभोर रहने से है।

त्वरित सुझाव: सुरा को वास्तविक मदिरा न मानें; स्नेह और अपने मन के गान के संदर्भ से उसका प्रतीकात्मक अर्थ खोलें।

8(ख). कवि जग का ध्यान क्यों नहीं करता? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस काव्यांश में कवि का आंतरिक भावजगत और संसार की प्रशंसा पाने की प्रवृत्ति आमने-सामने हैं। कवि अपने मन के प्रति सच्चा रहना चाहता है।
- जग का ध्यान न करने का आशय यहाँ लोकप्रशंसा या स्वीकृति की चिंता न करना है। उत्तर को काव्यांश के स्नेह और मन के गान से जोड़कर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: कवि की प्राथमिकता पहचानें कवि स्नेह की मस्ती में डूबा हुआ है। वह अपनी सच्ची भावनाओं और अनुभूतियों को गीत में व्यक्त करता है। इसलिए वह यह सोचकर नहीं गाता कि संसार उसके बारे में क्या कहेगा या उसे कितना सम्मान देगा। उसके लिए अपने मन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति अधिक महत्वपूर्ण है।

चरण 2: संसार की अपेक्षा से अंतर स्पष्ट करें काव्यांश में कहा गया है कि जग उन्हीं को पूछता है जो जग की गाते हैं। अर्थात संसार प्रायः अपनी रुचि और अपेक्षा के अनुरूप बोलने वालों को महत्व देता है। कवि इस स्वीकृति के लिए अपने मन की आवाज नहीं बदलता। वह 'मैं अपने मन का गान किया करता हूँ' कहकर अपनी भावगत स्वतंत्रता स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि जग का ध्यान इसलिए नहीं करता क्योंकि वह लोकप्रशंसा की अपेक्षा प्रेममय निजी अनुभूतियों और अपने मन की सच्ची अभिव्यक्ति को महत्व देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जग की प्रशंसा पाने और अपने मन की सच्ची अभिव्यक्ति के बीच का अंतर अवश्य स्पष्ट करें।

8(ग). सम्मान देने-पाने में समाज क्या रीत अपनाता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में समाज की प्रशंसा और सम्मान का संबंध उसकी अनुकूल बातें कहने से जोड़ा गया है।
- पंक्ति "जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते" उत्तर का प्रत्यक्ष आधार है।

चरण 1: पंक्ति का आशय समझिए समाज प्रायः उन्हीं लोगों की पूछ-परख करता है जो उसकी प्रशंसा करते हैं, उसके विचारों के अनुरूप बोलते हैं और उसकी पसंद का गान करते हैं। यहाँ "जग की गाते" का अर्थ समाज का गुणगान करना है।

चरण 2: लेन-देन की रीति स्पष्ट कीजिए इस प्रकार सम्मान देने-पाने में समाज पारस्परिक प्रशंसा की रीति अपनाता है। जो उसकी बड़ाई करता है, उसे वह प्रतिष्ठा देता है। कवि अपने मन का गान करता है, इसलिए समाज की स्वीकृति को अपने सृजन का आधार नहीं बनाता। कविता में समाज की इस रीति और कवि की स्वतंत्र वृत्ति का अंतर सामने आता है। समाज अपने अनुकूल गाने वाले को महत्व देता है, जबकि कवि अपने अंतर्मन के प्रति सच्चा बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाज अपनी प्रशंसा करने वालों को सम्मान देता है; उसकी रीति गुणगान के बदले पूछ-परख और प्रतिष्ठा देने की है।

त्वरित सुझाव: "जग की गाते" को समाज का गुणगान समझकर सम्मान मिलने की शर्त स्पष्ट कीजिए।

8(घ). कवि के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि के स्वभाव की पहचान उसकी अपनी उक्तियों से की जाती है।
- स्नेह-सुरा प्रेम का प्रतीक है और अपने मन का गान स्वतंत्र आत्माभिव्यक्ति को दर्शाता है।

चरण 1: प्रेम की प्रधानता बताइए कवि स्नेह-सुरा का पान करता है, अर्थात उसका हृदय प्रेम और आत्मीयता से भरा है। उसका जीवन बाहरी प्रतिष्ठा से अधिक अपने भीतर के स्नेह और भावनाओं से संचालित होता है। इससे उसके भावुक और संवेदनशील स्वभाव का परिचय मिलता है।

चरण 2: आत्मनिष्ठा और स्वाभिमान समझाइए वह जग की चिंता करके अपनी अभिव्यक्ति नहीं बदलता, बल्कि अपने मन का गान करता है। वह लोकप्रशंसा पाने के लिए समाज की चापलूसी नहीं करता। इस कारण वह स्वाभिमानी, मस्त और स्वतंत्र विचारों वाला है। जग की उपेक्षा यहाँ प्रेमहीनता नहीं, बाहरी स्वीकृति से मुक्त रहने का भाव है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि प्रेममय, संवेदनशील, स्वाभिमानी और स्वतंत्र स्वभाव का है। वह समाज की प्रशंसा पाने के बजाय अपने मन की सच्ची अनुभूतियाँ व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: स्वभाव बताते समय "स्नेह-सुरा" से प्रेम और "मन का गान" से स्वतंत्रता का प्रमाण दीजिए।

अथवा

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुहु लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।। [8 अंक]

8(क). लक्ष्मण के बिना राम का जीवन कैसा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में उपमाओं के माध्यम से लक्ष्मण के बिना राम की असहायता व्यक्त हुई है।
- पक्षी के पंख, सर्प की मणि और हाथी की सूँड़ की तुलना जीवन की अनिवार्य शक्ति से है।

चरण 1: तीनों उपमाएँ पहचानिए राम कहते हैं कि लक्ष्मण के बिना उनका जीवन वैसा है जैसे पंखों के बिना पक्षी, मणि के बिना सर्प और सूँड़ के बिना हाथी। इन तीनों स्थितियों में प्राणी अपनी अत्यंत आवश्यक शक्ति अथवा विशेषता से वंचित हो जाता है और दीन हो उठता है।

चरण 2: राम की जीवन-दशा स्पष्ट कीजिए इसी प्रकार लक्ष्मण से वियोग राम को असहाय और शक्तिहीन बना देगा। भाई के बिना जीवन का सहारा और आनंद छिन जाएगा। वे यह भी कहते हैं कि यदि जड़ दैव उन्हें जीवित रखे, तो उनका जीवन ऐसी ही दीन दशा में बीतेगा। यह तुलना लक्ष्मण के प्रति उनके गहरे स्नेह को प्रकट करती है। ये उपमाएँ भाई को राम के जीवन का अनिवार्य सहारा बताती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लक्ष्मण के बिना राम का जीवन पंखहीन पक्षी, मणिहीन सर्प और सूँड़हीन हाथी की तरह दीन, असहाय और शक्तिहीन है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीनों उपमाएँ लिखकर उनके साझा भाव, अर्थात असहायता, को अवश्य स्पष्ट कीजिए।

8(ख). नारी के बारे में कवि का क्या विचार है? काव्यांश के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह कथन लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्याकुल राम के विलाप का अंश है।
- काव्यांश में पत्नी की हानि की तुलना सहोदर भाई की अपूरणीय क्षति से की गई है।

चरण 1: काव्यांश में व्यक्त विचार बताइए राम के कथन में पुत्र, धन, नारी, भवन और परिवार संसार में बार-बार मिल सकते हैं, पर सगा भाई फिर नहीं मिल सकता। इस तुलना में नारी अर्थात पत्नी की हानि को सहोदर भाई की हानि जितना अपूरणीय नहीं माना गया है।

चरण 2: विलाप के संदर्भ में अर्थ स्पष्ट कीजिए राम कहते हैं कि पत्नी के कारण प्रिय भाई को खोने के बजाय वे संसार का अपयश सह लेते; पत्नी की हानि उन्हें भाई की मृत्यु से कम बड़ी क्षति लगती है। कवि ने राम के इस प्रलाप से भ्रातृस्नेह की तीव्रता व्यक्त की है। कथन को इसी दुःख और व्याकुलता के प्रसंग में समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में पत्नी की हानि को सहोदर भाई की हानि की अपेक्षा कम बड़ी क्षति कहा गया है। यह विचार लक्ष्मण के प्रति राम के प्रगाढ़ प्रेम और शोक से जुड़ा है।

त्वरित सुझाव: नारी-विषयक पंक्ति का आशय बताते समय उसे राम के भ्रातृशोक और प्रलाप के संदर्भ से जोड़िए।

8(ग). राम को अवध जाने में क्या संकोच है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- "जैहउँ अवध कवन मुहु लाई" राम के संकोच का प्रत्यक्ष आधार है।
- राम को पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो देने का आरोप और उससे जुड़ा अपराधबोध व्यथित करता है।

चरण 1: संकोच का कारण पहचानिए राम को यह संकोच है कि यदि लक्ष्मण की मृत्यु हो गई, तो वे उनके बिना अयोध्या किस मुँह से लौटेंगे। उन्हें लगेगा कि अपनी पत्नी सीता के लिए युद्ध करते हुए उन्होंने अपने प्रिय भाई को गँवा दिया। इस कारण उनके मन में गहरा अपराधबोध है।

चरण 2: लोकलज्जा का भाव समझाइए अवध लौटने पर भाई को साथ न ला पाने की स्थिति उनके लिए असहनीय होगी। वे अपने इस व्यवहार को कैसे उचित ठहराएँगे, यही चिंता उन्हें व्याकुल करती है। इसीलिए वे कहते हैं कि पत्नी की हानि और संसार का अपयश सह लेना प्रिय भाई को खोने से अच्छा होता।

चरण 3: निष्कर्ष राम को संकोच है कि पत्नी के लिए प्रिय भाई को गँवाकर वे अवध किस मुँह से जाएँगे। भाई को न बचा पाने का अपराधबोध और लोकलज्जा उन्हें व्यथित कर रहे हैं।

त्वरित सुझाव: "कवन मुहु लाई" के साथ "नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई" का कारण जोड़कर उत्तर पूरा कीजिए।

8(घ). राम की व्याकुलता और प्रलाप पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लक्ष्मण की मूर्च्छा से उत्पन्न विलाप राम के मानवीय और स्नेहपूर्ण रूप को सामने लाता है।
- प्रलाप में दुःख से व्याकुल व्यक्ति आशंका, स्मृति और पश्चात्ताप से भरी बातें कहता है।

चरण 1: व्याकुलता के संकेत बताइए राम लक्ष्मण को "ताता" कहकर जागने के लिए पुकारते हैं। वे बताते हैं कि अन्य संबंध और

संपत्तियाँ फिर मिल सकती हैं, पर सहोदर भाई नहीं मिलता। पंखहीन पक्षी, मणिहीन सर्प और सूँड़हीन हाथी की उपमाएँ उनके भीतर की असहायता को तीव्र रूप में व्यक्त करती हैं।

चरण 2: प्रलाप और मानवीय भाव स्पष्ट कीजिए दुःख से व्याकुल राम कभी भाई के बिना अपने जीवन की निरर्थकता सोचते हैं, कभी अवध लौटने की लज्जा व्यक्त करते हैं। वे पत्नी की हानि और अपयश सह लेने की बात भी कहते हैं। विचारों का यह करुण प्रवाह उनके गहरे भ्रातृप्रेम, आत्मग्लानि और भाई को खो देने के भय को दिखाता है।

चरण 3: निष्कर्ष राम की व्याकुल पुकार और प्रलाप में गहरा भ्रातृप्रेम, असहायता तथा अपराधबोध प्रकट होते हैं। लक्ष्मण-वियोग की आशंका उन्हें एक स्नेही, दुःखी मनुष्य के रूप में सामने लाती है।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में पुकार, तीन उपमाएँ और अवध लौटने की लज्जा से राम की मानसिक दशा सिद्ध कीजिए।

---

9. निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी,
हाथों पे झुलाती है उसे गोद भरी।
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।। [6 अंक]

9(क). काव्यांश का भाव-सौंदर्य लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में माँ और शिशु के स्नेहपूर्ण संबंध का स्वाभाविक चित्रण है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और चित्रित स्थिति के आधार पर अर्थ तथा प्रभाव को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: दृश्य और अनुभूति माँ आँगन में अपने सुंदर बच्चे को गोद में लेकर खड़ी है। वह उसे हाथों पर झुलाती है और बीच-बीच में हवा में उछालकर दुलारती है। बच्चे की खिलखिलाहट बताती है कि वह माँ के सान्निध्य में प्रसन्न और सुरक्षित है।

चरण 2: भाव का सौंदर्य बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहना उसके सौंदर्य के साथ माँ की दृष्टि में उसकी अनमोलता भी प्रकट करता है। झुलाना, उछालना और हँसना साधारण घरेलू क्रियाएँ हैं, किंतु इन्हीं के माध्यम से मातृस्नेह का कोमल और जीवंत रूप सामने आता है। पूरे आँगन में गूँजती हँसी परिवार के उल्लास का अनुभव कराती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य निष्कपट मातृस्नेह, शिशु की सहज प्रसन्नता और वात्सल्यपूर्ण घरेलू जीवन के सजीव अंकन में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य बताते समय माँ की क्रिया और बच्चे की प्रतिक्रिया को जोड़कर वात्सल्य स्पष्ट करें।

9(ख). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलंकार की पहचान शब्दों की पुनरावृत्ति और उपमेय-उपमान के संबंध से की जाती है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और चित्रित स्थिति के आधार पर अर्थ तथा प्रभाव को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: रूपक अलंकार 'चाँद के टुकड़े' में बच्चे को सीधे चाँद का टुकड़ा कहा गया है। यहाँ बालक उपमेय और चाँद का टुकड़ा उपमान है। दोनों के बीच समानता बताने के लिए 'जैसा' आदि शब्द नहीं आए हैं, बल्कि उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप है। इसलिए यहाँ

रूपक अलंकार है। इससे शिशु की सुंदरता तथा माँ को उसके अत्यंत प्रिय होने का भाव उभरता है।

चरण 2: पुनरुक्तिप्रकाश का प्रभाव 'रह-रह' में एक ही शब्द की आवृत्ति से माँ द्वारा बार-बार बच्चे को हवा में उछालने का भाव प्रकट हुआ है। यह पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है। इसकी आवृत्ति दृश्य में गति और लय लाती है। 'खिलखिलाते' शब्द बच्चे की हँसी को श्रव्य बनाकर वर्णन की सजीवता बढ़ाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में 'चाँद के टुकड़े' में रूपक और 'रह-रह' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार प्रमुख हैं।

त्वरित सुझाव: रूपक पहचानते समय बच्चे पर चाँद के टुकड़े का सीधा आरोप दिखाएँ; केवल सुंदरता का उल्लेख न करें।

9(ग). भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता शब्द-चयन, वाक्य-विन्यास, बिंब और लय के आधार पर स्पष्ट की जाती है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और चित्रित स्थिति के आधार पर अर्थ तथा प्रभाव को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: सरल बोलचाल की भाषा इस काव्यांश की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और घरेलू बोलचाल के निकट है। 'आँगन', 'हाथों', 'गोद' और 'बच्चे' जैसे परिचित शब्द दृश्य को आत्मीय बनाते हैं। 'लोका देती है' जैसे लोकप्रचलित प्रयोग से भाषा में देशज बोलचाल की मिठास आती है। जटिल विचारों या कठिन शब्दों के स्थान पर साधारण घरेलू अनुभव को अभिव्यक्ति मिली है।

चरण 2: चित्रात्मकता और संगीतात्मकता माँ का बच्चे को झुलाना और हवा में उछालना एक गतिशील दृश्य-बिंब रचता है। 'खिलखिलाते' और 'गूँज' से बच्चे की हँसी सुनाई देने जैसी लगती है। 'रह-रह' की पुनरावृत्ति तथा 'खड़ी', 'भरी', 'हँसी' का ध्वनिसाम्य रुबाई में लय और माधुर्य लाते हैं। भाषा की कोमलता वात्सल्य के अनुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सरल, लोकजीवन से जुड़ी, चित्रात्मक, ध्वन्यात्मक तथा लयपूर्ण है।

त्वरित सुझाव: हर भाषागत विशेषता के साथ काव्यांश का कोई शब्द या प्रयोग देकर उसका प्रभाव स्पष्ट करें।

---

10. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

उस बल को नाम जो दो; पर निश्चय ही वह उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्त्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं। मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों के अन्तर देखूँ और प्रतिपादन करूँ। मुझे शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ। लेकिन इतना तो है कि तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उसी बल को सच्चा बल मानकर बात की जाय तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है। [8 अंक]

10(क). गद्यांश में किस बल की बात की गई है? उस बल की विशेषता लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वास्तविक शक्ति को बाहरी धन-संपत्ति के बजाय मनुष्य की आंतरिक स्वतंत्रता से जोड़ा गया है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और चित्रित स्थिति के आधार पर अर्थ तथा प्रभाव को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: बल की पहचान यहाँ आत्मिक अथवा नैतिक बल की चर्चा है। इस बल वाला व्यक्ति धन-वैभव के आकर्षण में अपने विवेक को नहीं खोता। लेखक उसके अलग-अलग नामों की व्याख्या में उलझने के बजाय उसके स्वभाव को पहचानना चाहता है। गद्यांश में 'आत्मिक,

धार्मिक, नैतिक' शब्द इसी आंतरिक शक्ति की ओर संकेत करते हैं।

चरण 2: बल की विशेषता यह शक्ति संचय की तृष्णा और वैभव की लालसा से मुक्त रहने में प्रकट होती है। जहाँ केवल अधिक धन बटोरने की इच्छा है, वहाँ इस बल का बीज नहीं है। इसलिए इसकी विशेषता बाहरी संपत्ति की अधिकता नहीं, बल्कि इच्छाओं पर नियंत्रण तथा धन के सामने न झुकने की क्षमता है। इससे मनुष्य अपनी चेतना और स्वतंत्रता बनाए रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश में धन के मोह से मुक्त रखने वाले आत्मबल की बात है; उसकी विशेषता तृष्णा पर विजय और आंतरिक दृढ़ता है।

त्वरित सुझाव: बल की पहचान करते समय 'आत्मिक' शब्द को संचय की तृष्णा से मुक्त रहने वाली विशेषता से जोड़ें।

10(ख). व्यक्ति की निर्बलता कब और कैसे प्रमाणित होती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक धन के प्रति असंयमित आकर्षण को मनुष्य की आंतरिक कमजोरी का प्रमाण मानता है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और चित्रित स्थिति के आधार पर अर्थ तथा प्रभाव को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: निर्बलता कब प्रकट होती है जब व्यक्ति में धन बटोरकर रखने की स्पृहा और सांसारिक वैभव पाने की अनियंत्रित चाह पैदा होती है, तब उसकी निर्बलता प्रमाणित होती है। वह संतोष के स्थान पर निरंतर अधिक संग्रह की इच्छा से संचालित होने लगता है। गद्यांश में संचय की तृष्णा और वैभव की चाह को स्पष्ट रूप से इस कमजोरी का लक्षण कहा गया है।

चरण 2: निर्बलता कैसे सिद्ध होती है ऐसा व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाता और धन के सामने झुक जाता है। उसके निर्णयों को उसका विवेक संचालित करने के बजाय धन का आकर्षण प्रभावित करने लगता है। इस प्रकार चेतन मनुष्य जड़ संपत्ति का अधीन बन जाता है। बाहरी वैभव बढ़ जाने पर भी यह निर्भरता उसकी आंतरिक शक्ति का अभाव ही दिखाती है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यक्ति की निर्बलता धन-संचय और वैभव की अतृप्त चाह में प्रकट होती है, क्योंकि तब वह धन का स्वामी रहने के बजाय उसके मोह का अधीन बन जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'कब' के लिए तृष्णा की स्थिति और 'कैसे' के लिए धन के अधीन होने की प्रक्रिया लिखें।

10(ग). 'अपर जाति का तत्त्व' किसे कहा है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अपर जाति' का अर्थ यहाँ सांसारिक धन-वैभव से भिन्न स्तर या प्रकार का होना है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और चित्रित स्थिति के आधार पर अर्थ तथा प्रभाव को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: किसे कहा गया है लेखक ने धन और वैभव के आकर्षण से स्वतंत्र रहने वाले आत्मिक अथवा नैतिक बल को 'अपर जाति का तत्त्व' कहा है। यह मनुष्य के भीतर की वह दृढ़ता है जो उसे संचय की तृष्णा से बचाती है। इसके नाम आत्मिक, धार्मिक या नैतिक हो सकते हैं; लेखक का ध्यान नामों के अंतर के बजाय इस शक्ति की वास्तविक प्रकृति पर है।

चरण 2: ऐसा कहने का कारण यह बल उस सांसारिक स्तर की वस्तु नहीं है जहाँ धन और वैभव फलते-फूलते हैं। उसे संपत्ति बटोरकर प्राप्त नहीं किया जा सकता। उलटे, जहाँ संग्रह की लालसा प्रबल है, वहाँ इस बल का बीज ही नहीं है। इसलिए इसका स्वरूप भौतिक संपन्नता से अलग है; यह आत्मसंयम, संतोष और धन के सामने न झुकने में प्रकट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष आत्मिक बल को 'अपर जाति का तत्त्व' कहा गया है, क्योंकि उसका आधार धन-वैभव नहीं, बल्कि तृष्णा से मुक्ति

और आंतरिक दृढ़ता है।

त्वरित सुझाव: 'अपर जाति' को सामाजिक जाति न समझें; प्रसंग के अनुसार इसे भौतिक वैभव से अलग प्रकृति का तत्त्व बताएँ।

10(घ). आशय स्पष्ट कीजिए : 'वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करने के लिए प्रतीकात्मक शब्दों और गद्यांश के धन-संचय संबंधी विचार का संबंध समझना आवश्यक है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और चित्रित स्थिति के आधार पर अर्थ तथा प्रभाव को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: शब्दों का प्रसंगगत अर्थ यहाँ 'चेतन' विवेक और इच्छा-शक्ति रखने वाला मनुष्य है, जबकि 'जड़' निर्जीव धन-संपत्ति है। सामान्यतः मनुष्य अपने विवेक से धन का उपयोग करता है। धन अपने आप में चेतन या निर्णय लेने वाला नहीं है। इसलिए उसकी विजय कहना वास्तविक युद्ध का वर्णन नहीं, मनुष्य पर उसके आकर्षण के प्रभाव की अभिव्यक्ति है।

चरण 2: कथन का आशय जब संचय की तृष्णा मनुष्य पर हावी हो जाती है, तो उसका जीवन धन पाने और बटोरने के उद्देश्य से संचालित होने लगता है। वह अपने विवेक और आत्मसंयम के बजाय लालसा के अनुसार चलने लगता है। इस स्थिति में उपयोग की वस्तु ही उसके ऊपर अधिकार जमा लेती है। लेखक इसे मनुष्य की शक्ति नहीं, निर्बलता मानता है क्योंकि चेतन व्यक्ति जड़ पदार्थ के मोह में पराधीन हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि धन की अनियंत्रित लालसा मनुष्य के विवेक को दबाकर उसे संपत्ति का अधीन बना देती है; यही चेतन पर जड़ की प्रतीकात्मक विजय है।

त्वरित सुझाव: आशय में पहले चेतन और जड़ का अर्थ बताएँ, फिर समझाएँ कि धन की लालसा विवेक को कैसे दबाती है।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि के और किसान के कार्य में समानता किस प्रकार प्रदर्शित की गई है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने खेती की प्रक्रिया को कविता की रचना का रूपक बनाया है।
- किसान के खेत, बीज और फसल के समान कवि के पास कागज़, भाव और शब्दों की रचना है।

चरण 1: खेती और रचना की आरंभिक समानता किसान भूमि में बीज बोता है; उसी प्रकार कवि कागज़ के पन्ने को अपना छोटा खेत मानता है। किसी अनुभूति या भावना का बीज उसके मन में पड़ता है। कल्पना का सहारा पाकर यह बीज विकसित होता है और शब्दों के अंकुर निकलते हैं। इस प्रकार दोनों कार्यों का आरंभ छोटी-सी संभावना से होता है, जिसे विकसित करके सार्थक रूप देना पड़ता है।

चरण 2: श्रम और फसल की समानता तथा विशेषता किसान की देखभाल से खेत में पौधे, पत्ते और फूल आते हैं तथा अंत में अन्न की फसल तैयार होती है। कवि के भाव भी कल्पना और अभिव्यक्ति के द्वारा पल्लवित-पुष्पित होकर पूर्ण कविता बन जाते हैं। दोनों को अपनी उपज को विकसित करने के लिए धैर्य और सृजनात्मक श्रम की आवश्यकता होती है। किसान अन्न से लोगों की शारीरिक भूख मिटाता है और कवि अपनी रचना के रस से पाठकों को मानसिक तथा भावनात्मक तृप्ति देता है। अंतर यह है कि अन्न की फसल एक बार कटकर समाप्त हो जाती है, जबकि कविता की रसपूर्ण फसल बार-बार पढ़े जाने पर भी समाप्त नहीं होती। उसका आनंद जितना बाँटा जाता है, उतना ही बढ़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि और किसान दोनों बीज को विकसित कर उपयोगी फसल देते हैं; कविता में भावना बीज, कागज़ खेत और काव्य-रस अक्षय फसल है।

त्वरित सुझाव: पहले खेत-बीज-फसल के समानांतर कागज़-भावना-कविता लिखें, फिर काव्य-रस की अक्षयता बताएँ।

11(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'आत्मपरिचय' कविता में "मैं और, और जग और कहाँ का नाता" से कवि की किस मनोदशा का उल्लेख किया गया है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति में कवि की निजी अनुभूति और संसार की प्रवृत्ति का अंतर प्रकट होता है।
- कवि संवेदना, प्रेम और स्वतंत्र जीवन-दृष्टि को सांसारिक मानदंडों से अधिक महत्व देता है।

चरण 1: कवि और संसार की भिन्न प्रवृत्तियाँ इस पंक्ति में कवि अनुभव करता है कि उसका भाव-जगत और बाहरी संसार अलग-अलग दिशाओं में चलते हैं। संसार भौतिक उपलब्धियों, व्यवहारगत लाभ और सामाजिक मान्यताओं को महत्त्व देता है, जबकि कवि प्रेम, संवेदना और अपने मन की अनुभूतियों में जीता है। उसकी प्रसन्नता तथा पीड़ा को संसार अपने परिचित पैमानों से पूरी तरह नहीं समझ सकता। इसलिए वह अपने और जगत के बीच आत्मीय संबंध के अभाव का अनुभव करता है।

चरण 2: मनोदशा का आशय यह कथन कवि की भीतरी एकाकी अनुभूति, संसार से असंगति और अपने व्यक्तित्व के प्रति सजगता को व्यक्त करता है। वह दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार अपना जीवन ढालकर अपनी विशिष्टता खोना नहीं चाहता। संसार से उसका मतभेद प्रेम की कमी के कारण नहीं, जीवन को समझने और जीने की अलग दृष्टि के कारण है। वह जगत का भार और उसकी कठिनाइयाँ अनुभव करते हुए भी अपने भीतर के प्यार और स्वतंत्र भावलोक को सँजोए रखता है। अतः इस पंक्ति में अलगाव के साथ अपने भाव-सत्य पर टिके रहने का स्वाभिमान भी दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति में कवि की संसार से मानसिक असंगति, आंतरिक एकाकीपन तथा प्रेमपूर्ण स्वतंत्र व्यक्तित्व के प्रति निष्ठा व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: अलगाव का अर्थ केवल निराशा न लिखें; कवि की प्रेममयी, स्वतंत्र जीवन-दृष्टि को भी स्पष्ट करें।

11(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'उषा' कविता में गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र कैसे है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में घरेलू वस्तुओं के उपमानों से ग्रामीण सुबह का दृश्य मूर्त होता है।
- अँधेरे से प्रकाश की ओर बदलते रंग शब्दचित्र को गतिशील बनाते हैं।

चरण 1: ग्रामीण परिवेश के मूर्त बिंब कवि ने भोर के आकाश को नीले शंख जैसा बताने के बाद राख से लीपे हुए गीले चौके का बिंब दिया है। चौका ग्रामीण घर के सहज अनुभव से जुड़ा है और आकाश की धूसर, नम-सी छवि को सामने लाता है। कहीं आकाश में बहुत काली सिल पर थोड़ी लाल केसर मल दिए जाने का आभास होता है। इससे गहरे अँधेरे के बीच फैलती हल्की लालिमा दिखाई देती है। स्लेट पर लाल खड़िया चाक मलने का बिंब भी इसी बदलते रंग को सजीव करता है।

चरण 2: दृश्य की गतिशीलता ये चित्र एक ही स्थान पर ठहरे हुए वर्णन नहीं हैं। भोर बढ़ने के साथ आकाश का रंग और प्रकाश लगातार बदलते हैं। पहले नीला तथा धूसर अँधेरा है, फिर उसमें लालिमा उभरती है और अंततः उजाला फैलने लगता है। नीले जल में किसी की गोरी देह झिलमिलाने का बिंब इस परिवर्तन को और अधिक सजीव बनाता है। सूर्योदय होते ही उषा का जादू टूट जाता है। इस क्रम के कारण पाठक सुबह को बनते और बदलते हुए देखता है; ग्रामीण जीवन की परिचित वस्तुएँ इस प्राकृतिक परिवर्तन को आत्मीय तथा दृश्यात्मक बना देती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष चौका, सिल और स्लेट जैसे बिंबों तथा रंग-प्रकाश के क्रमिक परिवर्तन से कविता में गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र बनता है।

त्वरित सुझाव: दो ग्रामीण बिंब देने के बाद अँधेरे, लालिमा और सूर्योदय का क्रम दिखाएँ; तभी गतिशीलता स्पष्ट होगी।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : बाजार जाते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? 'बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण तभी उपयोगी है जब मनुष्य अपनी वास्तविक जरूरत पहचाने।
- मन का खालीपन और धन का अहंकार अनावश्यक खरीदारी को बढ़ाते हैं।

चरण 1: आवश्यकता का स्पष्ट बोध बाज़ार जाते समय सबसे पहले यह स्पष्ट होना चाहिए कि हमें वास्तव में किन वस्तुओं की आवश्यकता है। मन को खाली रखकर, केवल आकर्षक चीजें देखने या धन खर्च करने की इच्छा से बाज़ार जाने पर उसका जादू हम पर हावी हो सकता है। सजी हुई दुकानें और वस्तुओं की चमक ऐसी चीजें भी आवश्यक लगने लगती हैं जिनका हमारे जीवन में कोई उपयोग नहीं होता। इसलिए खरीद का आधार मन की चंचल इच्छा के स्थान पर वास्तविक जरूरत और उपयोगिता होना चाहिए।

चरण 2: संयम और क्रयशक्ति का उचित उपयोग हमें अपनी आय, साधन और आवश्यकताओं के अनुसार खरीदारी करनी चाहिए। केवल यह सोचकर कोई वस्तु नहीं लेनी चाहिए कि जेब में पैसा है या दूसरे लोग उसे खरीद रहे हैं। पाठ में भगत जी का आचरण इसका उदाहरण है। वे अपने लिए आवश्यक जीरा और काला नमक खरीदते हैं; बाज़ार की अन्य आकर्षक वस्तुएँ उन्हें विचलित नहीं करतीं। स्पष्ट उद्देश्य और संतुष्ट मन के कारण वे बाज़ार से लाभ लेते हैं। अत: व्यक्ति को धन के प्रदर्शन, तुलना और लोभ से बचते हुए विवेक बनाए रखना चाहिए। ऐसा ग्राहक बाज़ार को आवश्यक वस्तुओं के आदान-प्रदान का उपयोगी साधन बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार जाते समय जरूरत का ज्ञान, मन की संतुष्टि, आर्थिक सामर्थ्य और संयम आवश्यक हैं, ताकि आकर्षण हमें अनावश्यक खरीदारी में न फँसाए।

त्वरित सुझाव: भगत जी के जीरा-काला नमक खरीदने के उदाहरण से जरूरत और बाज़ार के आकर्षण का अंतर स्पष्ट करें।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'भक्तिन वाक्पटु थी', पाठ के आधार पर उदाहरण देकर पुष्टि कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्पटुता का अर्थ प्रसंग के अनुसार प्रभावशाली तर्क देकर अपनी बात मनवा लेना है।
- भक्तिन अपने व्यवहार का औचित्य सिद्ध करने के लिए व्यावहारिक बुद्धि और लोकविश्वास का सहारा लेती है।

चरण 1: पैसे रखने के प्रसंग में तर्क भक्तिन अनपढ़ होने पर भी बातचीत में बहुत चतुर थी। लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसे वह सँभालकर रख लेती थी। इस व्यवहार पर आपत्ति होने पर वह उसे चोरी मानने को तैयार नहीं होती। उसका तर्क था कि उसने लेखिका का ही पैसा सँभालकर रखा है; इसमें चोरी की बात कहाँ है। इस प्रकार वह अपने कार्य को गलत मानने के स्थान पर उसकी ऐसी व्याख्या करती है जिससे अपना पक्ष बचा सके। यह उसके तत्काल उत्तर देने और शब्दों से स्थिति अपने अनुकूल बनाने की क्षमता का उदाहरण है।

चरण 2: सिर मुंडाने के प्रसंग में प्रत्युत्तर लेखिका को भक्तिन का बार-बार सिर मुंडाना पसंद नहीं था। इस विषय पर रोके जाने पर भक्तिन शास्त्र का सहारा लेकर कहती है कि तीर्थ जाने पर सिर मुंडाने की बात लिखी है। वह उस तुकबंदी को अपने पक्ष में प्रमाण बनाती है जिसमें तीर्थ पर मुंडाने से फल मिलने का उल्लेख है। लेखिका के तर्क के सामने वह निरुत्तर होकर चुप नहीं बैठती, बल्कि लोकमान्यता को अधिकारपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि भक्तिन औपचारिक शिक्षा के अभाव में भी अवसरानुकूल उत्तर देना, अपनी मान्यता का समर्थन करना और सामने वाले के आक्षेप से बचना भली-भाँति जानती थी।

चरण 3: निष्कर्ष पैसे सँभालने को चोरी न मानने और सिर मुंडाने के पक्ष में शास्त्र का प्रमाण देने जैसे प्रत्युत्तर भक्तिन की वाक्पटुता सिद्ध करते हैं।

त्वरित सुझाव: विशेषण भर न लिखें; भक्तिन के किसी आचरण पर आपत्ति और उसके चतुर प्रत्युत्तर को साथ रखकर उदाहरण दें।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : इंदर सेना पर पानी डालने की उलझन को लेखक की जीजी ने किस तरह सुलझाया? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रसंग लोकविश्वास और तर्क के बीच लेखक की उलझन तथा जीजी की दान-संबंधी समझ को स्पष्ट करता है।
- जीजी के अनुसार किसी बड़े लाभ की कामना से पहले अपने पास की प्रिय वस्तु का अंश त्यागना पड़ता है।

चरण 1: लेखक की उलझन लेखक को लगता था कि अनावृष्टि में जब पीने का पानी भी कठिनाई से मिलता है, तब इंदर सेना के लड़कों पर पानी फेंकना उसकी बरबादी है। वह इस प्रथा का विरोध करता था। दूसरी ओर, जीजी उन लड़कों को पानी देती थीं और लेखक से भी ऐसा करवाना चाहती थीं। इसलिए उसके सामने पानी बचाने की समझ और जीजी के आग्रह के बीच उलझन थी।

चरण 2: जीजी का तर्क जीजी ने समझाया कि यह पानी की बरबादी नहीं, पानी का अर्घ्य चढ़ाना है। जिस वस्तु की कमी हो, उसका दान अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। इंद्र से वर्षा माँगने के लिए पहले मनुष्य को अपने पास के थोड़े पानी का मोह छोड़ना चाहिए। बिना त्याग के प्राप्ति की आशा उचित नहीं है।

चरण 3: बीज और फसल का उदाहरण जीजी ने किसान का उदाहरण देकर बात सरल की। किसान अच्छे बीजों को बचाकर खाने के बजाय खेत में डालता है; ऊपर से यह अनाज मिट्टी में फेंकना लगता है, पर इसी से आगे भरपूर फसल मिलती है। उसी तरह थोड़ा पानी देकर बहुत अधिक वर्षा की आशा की जाती है। जीजी की आत्मीयता और इस उदाहरण ने लेखक की उलझन का भावनात्मक समाधान किया।

चरण 4: निष्कर्ष जीजी ने इंदर सेना पर पानी डालने को अर्घ्य और त्याग बताया तथा बीज बोने से भरपूर फसल मिलने का उदाहरण देकर लेखक की उलझन सुलझाई।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले पानी की बरबादी वाली आपत्ति लिखें, फिर अर्घ्य, त्याग और बीज बोने का उदाहरण जोड़ें।

12(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : "सीमाएँ बँट जाने से दिल नहीं बँटा करते" – इस कथन के पक्ष या विपक्ष में 'नमक' कहानी के आधार पर तर्क दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी राजनीतिक विभाजन के बीच मानवीय आत्मीयता तथा जन्मभूमि से लगाव की निरंतरता दिखाती है।
- कथन के पक्ष में तर्क पात्रों की स्मृतियों, संवेदना और नमक से जुड़े व्यवहार पर आधारित होने चाहिए।

चरण 1: कथन के पक्ष में मत यह कथन उचित है। देश की सीमाएँ राजनीतिक निर्णय से बदल सकती हैं, लेकिन मनुष्य का अपनी जन्मभूमि, वहाँ के लोगों और साझा संस्कृति से लगाव अचानक समाप्त नहीं होता। नमक कहानी में भारत और पाकिस्तान के बीच खिंची सरहद के बावजूद पात्रों की स्मृतियाँ और स्नेह एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं।

चरण 2: सिख बीबी और सफिया का प्रसंग भारत में रहने वाली सिख बीबी लाहौर को भूल नहीं पातीं और सफिया से वहाँ का नमक लाने को कहती हैं। यह साधारण वस्तु उनके लिए जन्मभूमि की स्मृति और अपनेपन का प्रतीक है। सफिया उनकी भावना का सम्मान करके नमक लाने का प्रयत्न करती है। भिन्न धर्म और देश का होना उनके बीच आत्मीय संबंध बनने में बाधा नहीं बनता।

चरण 3: सीमा पर मानवीय संवेदना सीमा पर नमक का प्रसंग केवल नियम-कानून का प्रश्न नहीं रह जाता। पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी दिल्ली को अपना वतन मानता है, जबकि भारतीय कस्टम अधिकारी ढाका की स्मृतियों से जुड़ा है और उसे अपना वतन मानता है। वे बिछड़े स्थानों के प्रति प्रेम को समझते हैं। इस प्रकार दोनों ओर के मनुष्यों की एक जैसी पीड़ा और संवेदना प्रमाणित करती है कि नक्शे का विभाजन दिलों का विभाजन नहीं कर सकता।

चरण 4: निष्कर्ष नमक कहानी कथन का समर्थन करती है। सिख बीबी का लाहौर-प्रेम, सफिया की आत्मीयता और सीमा के अधिकारियों की स्मृतियाँ दिखाती हैं कि सरहद मानवीय रिश्तों और जन्मभूमि के लगाव को मिटा नहीं सकती।

त्वरित सुझाव: कथन के पक्ष में केवल सामान्य भावुकता न लिखें; सिख बीबी, सफिया और कस्टम अधिकारियों के प्रसंगों से उसे सिद्ध करें।

12(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'अभी चार्ली चैप्लिन पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है' – लेखक ने यह बात क्यों और किस संदर्भ में कही है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न चार्ली की कला की व्यापकता और पाठ के अंत में व्यक्त लेखक की सीमाबोधपूर्ण टिप्पणी का आशय पूछता है।
- चार्ली का हास्य सामान्य मनुष्य की कमजोरियों, संघर्ष और करुणा से जुड़ता है; इसलिए उसकी व्याख्या अनेक स्तरों पर संभव है।

चरण 1: कथन का संदर्भ लेखक ने चार्ली की लोकप्रियता, उसकी विशिष्ट हास्य-कला और भारतीय दर्शकों तथा कलाकारों से उसके संबंध पर विचार करने के संदर्भ में यह बात कही है। पाठ में चार्ली के योगदान के कुछ पक्षों की चर्चा हुई है, लेकिन लेखक महसूस करता है कि इतने भर से इस असाधारण कलाकार का पूरा मूल्यांकन नहीं हो सकता।

चरण 2: चार्ली की कला का विस्तार चार्ली की कला केवल हँसाने का कौशल नहीं है। उसके साधारण, असहाय पात्र में दर्शक अपनी कमजोरियाँ और संघर्ष पहचानता है। वह करुणा और हास्य को इस तरह जोड़ता है कि मनुष्य अपने ऊपर भी हँस पाता है। उसकी कला में सामाजिक विषमता, मानवीय गरिमा और जीवन से जूझते व्यक्ति की स्थिति पर विचार करने की अनेक संभावनाएँ हैं। इन सबका विस्तार से विवेचन किया जा सकता है।

चरण 3: भारतीय संदर्भ और शेष संभावनाएँ चार्ली की लोकप्रियता भाषा और भूगोल की सीमाओं से आगे जाती है। भारतीय सिनेमा में भी उसकी हास्य-करुणा से जुड़े प्रभावों की पड़ताल की जा सकती है। लेखक ने कुछ संकेत दिए हैं, पर चार्ली की फिल्मों, उसके प्रभाव और दर्शक से उसके संबंध पर अभी और चर्चा संभव है। इसलिए यह टिप्पणी विषय की व्यापकता तथा अपने लेख की सीमित परिधि की स्वीकृति है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक ने यह बात चार्ली की बहुआयामी कला, विश्वव्यापी प्रभाव और भारतीय संदर्भ में उसके महत्त्व की चर्चा करते हुए कही है। लेख में उठाए गए कुछ बिंदु उसके पूरे योगदान को समेट नहीं सकते।

त्वरित सुझाव: संदर्भ और कारण अलग-अलग स्पष्ट करें; चार्ली के हास्य-करुणा, सामान्य मनुष्य और भारतीय प्रभाव से उत्तर को जोड़ें।

13. नवयुवकों के लिए विशेष उपयोगी जीवन-मूल्यों की दृष्टि से 'जूझ' कहानी की विवेचना कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जूझ में आनंद का संघर्ष शिक्षा, आत्मनिर्भरता और रचनात्मक विकास के लिए निरंतर प्रयत्न का महत्त्व स्थापित करता है।
- जीवन-मूल्यों का विवेचन कथा के ठोस प्रसंगों से करना चाहिए; केवल सद्गुणों की सूची पर्याप्त नहीं है।
- नवयुवकों के लिए शिक्षा की आकांक्षा के साथ अनुशासन, श्रम, सहयोग और सृजनशीलता का विकास आवश्यक है।

चरण 1: शिक्षा और लक्ष्य के प्रति निष्ठा आनंद के पिता उसे पढ़ाने के बजाय खेती के काम में लगाए रखना चाहते हैं। किंतु आनंद समझता है कि शिक्षा उसके जीवन को बेहतर दिशा दे सकती है। वह विद्यालय लौटने की इच्छा छोड़ता नहीं है। यह प्रसंग नवयुवकों को सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी अपने विकास के लक्ष्य को पहचानना और उसके लिए प्रयत्न करते रहना चाहिए।

चरण 2: संघर्ष और श्रमशीलता विद्यालय जाने की अनुमति मिलने पर आनंद के दायित्व समाप्त नहीं होते। उसे खेती और घर के काम के साथ पढ़ाई करनी पड़ती है। वह कठिन दिनचर्या के बावजूद अध्ययन का अवसर सँभालता है। इससे स्पष्ट होता है कि सफलता केवल इच्छा से नहीं मिलती; समय का सदुपयोग, परिश्रम और कठिनाइयों को सहने की क्षमता भी चाहिए। वह श्रम से बचने के लिए नहीं, अपना भविष्य बनाने के लिए पढ़ना चाहता है।

चरण 3: सहयोग स्वीकार करना और आत्मसम्मान आनंद अपनी इच्छा पूरी करने के लिए दत्ता जी राव का सहारा लेता है। उनके हस्तक्षेप से पिता को उसे विद्यालय भेजने के लिए राजी करना संभव होता है। कथा बताती है कि उचित मार्गदर्शन लेना कमजोरी नहीं है। विद्यालय

में पिछड़ जाने और आरंभिक संकोच के बावजूद आनंद प्रयास करता है तथा पढ़ाई से अपनी स्थिति बेहतर बनाता है। इससे आत्मसम्मान को शिकायत के बजाय कर्म से पुष्ट करने की प्रेरणा मिलती है।

चरण 4: गुरु के प्रति आदर और सृजनशीलता सौंदलगेकर मास्टर के कविता पढ़ाने के ढंग से आनंद के भीतर काव्य के प्रति रुचि जागती है। वह कविता के स्वर, लय और भाव का आनंद लेना सीखता है तथा स्वयं रचना करने का प्रयास करता है। खेतों में काम करते हुए भी उसकी कल्पना सक्रिय रहती है। शिक्षक के प्रोत्साहन से उसकी प्रतिभा को दिशा मिलती है। यह प्रसंग युवाओं को योग्य गुरु से सीखने, अपने अनुभवों को समझने और भीतर की रचनात्मक क्षमता विकसित करने की प्रेरणा देता है।

चरण 5: युवाओं के लिए प्रासंगिक संदेश आनंद की प्रगति परिस्थितियों से पलायन का परिणाम नहीं, उनके बीच लगातार जूझने का फल है। पढ़ाई, श्रम और कविता उसके व्यक्तित्व को साथ-साथ विकसित करते हैं। आज के युवाओं के लिए भी लक्ष्य की स्पष्टता, अवसर का सम्मान, धैर्य और नियमित अभ्यास आवश्यक हैं। कहानी यह विश्वास जगाती है कि सीमित साधनों वाला विद्यार्थी भी सहयोग तथा अपने प्रयास से विकास का मार्ग बना सकता है।

चरण 6: निष्कर्ष जूझ नवयुवकों के लिए उपयोगी शिक्षा-प्रेम, परिश्रम, धैर्य, आत्मसम्मान, सहयोग और सृजनशीलता जैसे जीवन-मूल्यों की कथा है। आनंद का संघर्ष बताता है कि प्रतिकूल स्थितियों में निरंतर प्रयत्न और सही मार्गदर्शन से व्यक्तित्व तथा भविष्य का निर्माण संभव है।

त्वरित सुझाव: हर जीवन-मूल्य के साथ आनंद के जीवन का एक प्रसंग जोड़ें; शिक्षा, खेती के श्रम और काव्य-सृजन तीनों पक्ष अवश्य लें।

14(क). 'आधुनिकता' के प्रति यशोधर पंत और उसकी पत्नी के दृष्टिकोण का अंतर सोदाहरण समझाइए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर पंत और उनकी पत्नी का अंतर बदलते पारिवारिक मूल्यों तथा आधुनिक जीवन के प्रति उनके व्यवहार से स्पष्ट होता है।
- यशोधर बाबू परंपरा, सादगी और सामुदायिक संबंधों को महत्त्व देते हैं। उनकी पत्नी समय और बच्चों के साथ अपने रहन-सहन को बदलने में अधिक सहज हैं।

चरण 1: यशोधर पंत का परंपरा के प्रति लगाव यशोधर बाबू अपने गुरु और अभिभावक जैसे किशनदा की जीवन-पद्धति से गहरे प्रभावित हैं। सादगी, संयम, पुराने परिचितों के प्रति आत्मीयता और पारिवारिक दायित्व उनके लिए जीवन के आधार हैं। वे हर नई चीज़ को केवल नया होने के कारण स्वीकार नहीं करते। आधुनिक जीवन के दिखावे तथा परिवार में घटते संवाद से उन्हें असुविधा होती है। इसलिए बच्चों की नई जीवन-शैली उनके भीतर असमंजस उत्पन्न करती है।

चरण 2: पत्नी का बदलते समय से सामंजस्य उनकी पत्नी ने भी प्रारंभिक जीवन परंपरागत परिवेश में बिताया है, लेकिन अब वे बच्चों की रुचियों और सुविधाओं को अपनाने लगी हैं। पहनावे और घरेलू व्यवहार में आने वाले बदलावों का वे यशोधर बाबू जैसा विरोध नहीं करतीं। बच्चों के उत्साह में सम्मिलित होकर वे वर्तमान जीवन का आनंद लेना चाहती हैं। उनके लिए बच्चों के साथ बने रहना पुराने तौर-तरीकों पर आग्रह करने से अधिक आवश्यक है।

चरण 3: विवाह की वर्षगाँठ के प्रसंग से अंतर विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर बच्चों द्वारा आयोजित 'सिल्वर वैडिंग' का उत्सव इस अंतर को सामने लाता है। यशोधर बाबू ऐसे आयोजन, उसके तौर-तरीकों और उपहारों की संस्कृति के साथ सहज नहीं हो पाते, जबकि उनकी पत्नी बच्चों के आयोजन में प्रसन्नतापूर्वक भाग लेती हैं। बेटे द्वारा दिए गए ड्रेसिंग गाउन से यशोधर बाबू का मन किशनदा की स्मृति की ओर चला जाता है। इस प्रसंग में भी उनकी भावनाओं का केंद्र वस्तु का आधुनिक आकर्षण नहीं, पुराने आत्मीय संबंध हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार यशोधर पंत आधुनिकता को परंपरा और आत्मीय मूल्यों की कसौटी पर परखते हैं, जबकि उनकी पत्नी बदलते समय और बच्चों की पसंद के साथ अधिक आसानी से सामंजस्य बना लेती हैं। दोनों का अंतर आधुनिकता को स्वीकार करने की गति और दृष्टि का है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों के दृष्टिकोण अलग-अलग समझाकर सिल्वर वैडिंग के आयोजन और ड्रेसिंग गाउन के प्रसंग से तुलना स्पष्ट करें।

14(ख). महायुद्ध की विभीषिका के संदर्भ में ऐन फ्रेंक की डायरी को जीवंत दस्तावेज़ क्यों माना जाता है? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक की डायरी द्वितीय विश्वयुद्ध के समय नाज़ी अत्याचारों और यहूदियों के उत्पीड़न का अनुभव करने वाली एक किशोरी की प्रत्यक्ष गवाही है।
- युद्ध की विभीषिका केवल युद्धक्षेत्र में नहीं, बल्कि सामान्य मनुष्यों के भय, विस्थापन, अभाव और स्वतंत्रता के हनन में भी दिखाई देती है।

चरण 1: प्रत्यक्ष अनुभवों की प्रामाणिकता ऐन फ्रेंक ने युद्ध और नाज़ी शासन के आतंक को अपने जीवन में झेला। यहूदी होने के कारण उसे परिवार के साथ छिपकर रहना पड़ा। उसकी डायरी घटनाओं के बहुत बाद लिखा गया इतिहास नहीं, संकट के बीच दर्ज किए गए अनुभवों का लेखा है। इसीलिए उसमें उस समय के भय और अनिश्चितता की सीधी अनुभूति मिलती है। पाठक युद्ध को किसी दूर की घटना की तरह नहीं, मनुष्य के दैनिक जीवन को घेर लेने वाली त्रासदी की तरह देखता है।

चरण 2: भय और बंद जीवन का चित्रण छिपकर रहने वालों को पकड़े जाने का निरंतर डर था। उन्हें अपनी सामान्य गतिविधियों तक पर नियंत्रण रखना पड़ता था। बाहर की हिंसा, यहूदियों की धरपकड़, हवाई हमलों और आवश्यक वस्तुओं के अभाव की खबरें उनकी असुरक्षा बढ़ाती थीं। खुलकर घूमने, पढ़ने और मिलने-जुलने जैसी साधारण स्वतंत्रताएँ भी छिन गई थीं। डायरी इन स्थितियों के माध्यम से बताती है कि युद्ध निर्दोष लोगों के जीवन को किस तरह यातना में बदल देता है।

चरण 3: मानवीय संवेदना और आशा का स्वर ऐन केवल बाहरी घटनाएँ नहीं लिखती; वह अपना अकेलापन, पारिवारिक तनाव, मन की उलझनें और भविष्य के सपने भी व्यक्त करती है। किशोरी की सहज आकांक्षाओं और चारों ओर फैले आतंक का विरोध पाठक को गहराई से प्रभावित करता है। विपरीत परिस्थितियों में भी स्वतंत्र जीवन और बेहतर भविष्य की उसकी चाह बनी रहती है। इससे डायरी युद्ध के आँकड़ों से आगे जाकर पीड़ित मनुष्य की संवेदना, गरिमा और जीवित रहने की इच्छा को सुरक्षित करती है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन फ्रेंक की डायरी महायुद्ध की विभीषिका का जीवंत दस्तावेज़ है, क्योंकि उसमें नाज़ी उत्पीड़न का प्रत्यक्ष साक्ष्य और उससे प्रभावित किशोरी का आंतरिक जीवन साथ-साथ दर्ज है। वह युद्ध की अमानवीयता को दैनिक अनुभवों के माध्यम से मूर्त कर देती है।

त्वरित सुझाव: जीवंत दस्तावेज़ का अर्थ स्पष्ट करने के लिए प्रत्यक्ष गवाही, छिपकर रहने का भय और ऐन की मानवीय आकांक्षाएँ आपस में जोड़ें।